Postal Registration No. CHD/0107/2021-2023 Posted at MBU Chandigarh RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

वर्ष 23 अंक 10 30 अक्तूबर, 2023 मूल्य 5 रुपये

प्रधान की कलम से

महिला आरक्षण का सपना नारी शक्ति वंदन अधिनियम की गूंज में गुम

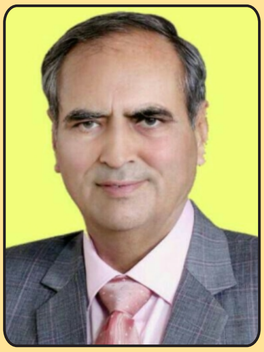

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

महिला आरक्षण बिल पास होने से पिछले दिनों रसोई में काम करती महिला या ईंट भंट्ठों पर जिंदगी खपाती मजदूर को भी ये आभास हो सकता था कि उसके अब संसद और विधानसभा में पहुंचने के रास्ते सरकार ने खोल दिए है लेकिन वास्तविकता और जुमलों में फर्क होता है। 2014 के चुनाव में जिस तरह से 15 लाख खाते में आने की बात हो या 2019 में किसानों की दोगुना आमदनी हो, की तरह अब 2024 के लिए उन्होंने महिला आरक्षण बिल पेश किया है। हाल ही में लोकसभा और राज्यसभा दोनों ने महिला आरक्षण विधेयक 2023 (128वाँ संवैधानिक संशोधन विधेयक) अथवा नारी शक्ति वंदन अधिनियम पारित कर दिया है और सच्चाई ये है कि अभी इसको हकीकत की जमीन पर उतरना बाकी है। नारी सशक्तिकरण एक सपना है जिसको वास्तव में हकीकत बनाने की जरूरत है? भारत जैसे देश में जहां महिला अधिकारों की स्थिति बेहद बुरी है, पूरी दुनिया के सबसे ज्यादा एनीमिया रोगी भारत की महिलाएं हैं।

इस नारी शक्ति वंदन अधिनियम के बारे में थोडी बहुत मुलभूत बातें भी जानना जरूरी है। यह विधेयक लोकसभा, राज्य विधानसभाओं और दिल्ली विधानसभा में महिलाओं के लिये एक–तिहाई सीटें आरक्षित करता है। यह लोकसभा और राज्य विधानसभाओं में अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति के लिये आरक्षित सीटों पर भी लागू होगा। लेकिन इस बिल में ओबीसी महिलाओं के लिए कोई प्रावधान नहीं रखा। इस बिल की आवश्यकता क्यों पडी इसके पीछे तर्क ये है कि वर्तमान लोकसभा में 82 महिला सांसद (15.2 प्रतिशत) और राज्यसभा में 31 महिलाएँ (13 प्रतिशत) हैं। जबकि पहली लोकसभा (5 प्रतिशत) के बाद से यह संख्या काफी बढ़ी है लेकिन कई देशों की तुलना में अभी भी काफी कम है। हाल के संयुक्त राष्ट्र महिला आँकड़ों के अनुसार, रवांडा (61 प्रतिशत), क्यूबा (53 प्रतिशत), निकारागुआ (52 प्रतिशत) महिला प्रतिनिधित्व में शीर्ष तीन देश हैं। महिला प्रतिनिधित्व के मामले में बांग्लादेश (21 प्रतिशत) और पाकिस्तान (20 प्रतिशत) भी भारत से आगे हैं। खैर ये बिल एक ना एक दिन तो हकीकत बन ही जाएगा लेकिन सरकारी घोषणा के मुताबिक 2029 से पहले लागु नहीं किया जा सकता।

महिलाओं को कई क्षेत्रों, संसद और राज्य विधान सभाओं में पर्याप्त प्रतिनिधित्व नहीं है लेकिन असली समस्या उनकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति में छिपी है जिस पर प्रधानमंत्री या उनका कोई मंत्री बात तक नहीं करना चाहता है। पीएलएफएस जनवरी–मार्च 2023 के अनुसार आज देश में कार्यबल के बीच श्रम भागीदारी दर (एलपीआर) 45.2 प्रतिशत है लेकिन महिलाओं में, यह निराशाजनक 20.6 प्रतिशत है। सितम्बर 2022 में सुप्रीम कोर्ट में 29 न्यायधीशों में केवल 3 महिला जज थी और जनवरी 2023 में केन्द्रिय मंत्री परिषद में 76 मैम्बर कौंसिल में केवल 14 प्रतिशत यानि 2 कैबिनेट मंत्री सहित कुल 11 महिला मंत्री थी। वर्ष 2021 में 3050239 के पुलिस बल में पुलिस तथा सभी अर्धसैनिक बलों में केवल 8.24 प्रतिशत महिला पुलिस कर्मी तैनात है। इसी प्रकार प्रशासनिक सेवाओं में भी महिला अधिकारियों की संख्या कम है। ओद्योगिक इकाइयों में भी पुरूषों के मुकाबले 18 प्रतिशत कामकाजी महिलाएं है। अधिकांश महिलाएं अपने घरों में काम करने के लिए बाध्य हैं। सभी बच्चों की स्कूली शिक्षा का औसत वर्ष 7–8 वर्ष है। लड़कियों के मामले में यह और भी कम होने की संभावना है। इसके अतिरिक्त किसान, कामगार और कास्तकारों के बच्चों का 5वीं व छठी कक्षा के बाद स्कूल छोड़ देना और बाल विवाह की मजबूरी आम बात है।

आज देश की किशोरी और महिलाएं पर्याप्त पौष्टिक भोजन से वंचित हैं। 15–49 वर्ष की आयु वर्ग की 57 प्रतिशत महिलाएं एनीमिया (एनएफएचएस–5) से पीड़ित हैं। निम्न सामाजिक स्थिति, निम्न व्यक्तिगत आय और गृहिणी की जिम्मेदारियों के संयोजन ने महिलाओं को उनके घरों तक सीमित कर दिया है और राजनीतिक क्षेत्र में उनकी भागीदारी को बाधित कर दिया है। राजीव गांधी और पी वी नरसिम्हा राव ने नई जमीन तोड़ते हुए आरक्षण की बदौलत लगभग 13,00,000 महिलाओं को पंचायत और नगर निकायों में निर्वाचित होने में सक्षम बनाया था और चौधरी देवीलाल ने तो इससे आगे बढते हुए महिला मजदूरों को दूध और जापे तक में सरकारी मदद देने का नियम बनाया था।

आज भारत में हर 16 मिनट में एक बलात्कार होता है, हर चार मिनट में एक महिला को उसके ससुराल वालों द्वारा क्रूरता का शिकार होना पड़ता है और हर दिन लगभग 19 दहेज हत्याएँ होती हैं। यहां तक कि हाल ही में पेश किए गए भारतीय न्याय संहिता विधेयक (2023) में भी "वैवाहिक बलात्कार" की घृणित रूप से पुरानी अवधारणा

शेष पेज–2 पर

शेष पेज–1

को बलात्कार घोषित नहीं किया गया है और सरकार है कि केवल इस विधेयक के बहाने ये साबित करने में जुट गई है कि भारत में महिलाओं की स्थिति बदल गई है। विपक्ष ओबीसी महिलाओं के लिए "कोटे के भीतर कोटा" का मुद्दा भी उठा सकता है, जिसे अभी तक इस विधेयक में जगह नहीं मिली है। इससे विपक्ष को इस विधेयक के राजनीतिक प्रभाव को भाजपा के पक्ष में सीमित करने और ओबीसी भावनाओं को अपने पक्ष में जुटाने में मदद मिल सकती है। वर्तमान में यह बिल सत्ता पक्ष व विपक्षी दलों का मात्र चुनावी मुद्दा बनकर रह जायेगा।

नारी शक्ति वंदन अधिनियम, अपने पिछले संस्करण की तरह, महिलाओं के लिए एससी/एसटी कोटा का एक तिहाई आरक्षण प्रदान करता है। यह प्रावधान भारतीय लोकतंत्र में हाशिये तक गुणात्मक परिवर्तन ला सकता है। यह सबाल्टर्न समूहों की राजनीतिक संस्ती पर पितृसत्तात्मक नियंत्रण की जांच करेगा, जो कि प्रमुख सामाजिक समूहों द्वारा उन पर अपना प्रभाव डालने का परिणाम है। यह भारत में एक नई दलित–बहुजन राजनीति को आकार दे सकता है। बाबा साहब अंबेडकर और कांशीराम जैसे दलित–बहुजन नेताओं और विचारकों ने दलित राजनीति में महिलाओं के लिए जगह बनाने की कोशिश की। महिला आरक्षण विधेयक समर्थन आधार को मजबूत कर सकता है। बड़ी संख्या में महत्वाकांक्षी दलित महिला नेता भी टिकट के लिए भाजपा और अन्य दलों की ओर रुख कर सकती हैं। जैसा कि हम जानते हैं, शिक्षित और उद्यमशील दलितों का एक बड़ा और उभरता हुआ वर्ग राजनीति में भाग लेने का इच्छुक है। सात दशकों के बढ़ते जमीनी स्तर के लोकतंत्र ने दलित महिलाओं का स्थानीय नेतृत्व भी तैयार किया है। ये राजनीतिक रूप से जागरूक, सक्षम निम्नवर्गीय महिलाएं उच्च नेतृत्व की आकांक्षा रखती हैं। यह विधेयक उनमें ऊपर की ओर राजनीतिक गतिशीलता लाएगा।

इस विधेयक द्वारा बनाई गई आशा के दायरे में, कुछ महत्वपूर्ण मुद्दे हैं जिनका समाधान किया जाना बाकी है। सबसे पहले, एससी और एसटी के बीच, प्रत्येक राज्य और क्षेत्र में केवल कुछ जातियों और समूहों ने मैदान में प्रवेश करने के लिए राजनीतिक दृश्यता और आर्थिक क्षमता हासिल कर ली है। इसलिए इन बड़े और राजनीतिक रूप से मुखर समूहों की महिलाओं को इन लाभों का एक बड़ा हिस्सा मिल सकता है। उदाहरण के लिए, उत्तर प्रदेश में 66 एससी समुदायों में से केवल पांच या छह और बिहार में 20 एससी समुदायों में से तीन या चार ने सुरक्षात्मक भेदभाव नीतियों का लाभ उठाया है। यह घटना अन्य भारतीय राज्यों में भी देखी जा सकती है। जनजातीय समुदायों में भी, जो महिलाएं बड़े, अधिक आर्थिक रूप से सशक्त समूहों से आती हैं, वे आ सकती हैं और इन अवसरों का दावा कर सकती हैं।

राजनीतिक दलों के लिए बड़ी चुनौती इन अवसरों को क्षितिज्ञ रूप से वितरित करना है, न कि केवल लंबवत रूप से। लेकिन क्या महिलाओं की भागीदारी राजनीति में एक नई संस्ती का निर्माण करेगी और पितृसत्तात्मक मानदंडों को पीछे धकेल देगी? बहुत कुछ इस बात पर निर्भर करेगा कि महिला आरक्षण की ये लाभार्थी जाति, वंश और धर्म जैसी पहचानों के साथ कैसे समझौता करती हैं, जो हमारे चुनावी लोकतंत्र में एक बड़ी भूमिका निभाते हैं। राजनीति में महिला आरक्षण इन तीन तरह से उत्पीड़ित महिलाओं –जो महिला, दलित और गरीब होने का खामियाजा भुगतती हैं –के लिए इन तथ्यों को तोड़–मरोड़कर सशक्तिकरण के रास्ते में बदलने की स्थितियां पैदा करेगा। अब वे राजनीति और नीति निर्धारण में महिलाओं के रूप में, दलित या आदिवासी महिलाओं के रूप में, या सामाजिक रूप से हाशिए पर रहने वाले व्यक्तियों के रूप में अपनी जगह का दावा करेंगी। उन करोडों महिलाओं के भविष्य का अभी कोई रोडमैप सरकार के पास नहीं है जो स्कूल जाने के लिए तरसती हैं।

बडा सवाल यही है कि क्या महिलाओं का आरक्षण वास्तव में महिलाओं को सशक्त करेगा, हमारी पितृसत्तात्मक मानसिकता को बदल देगा और उनके खिलाफ हिंसा को समाप्त कर देगा? न तो लंबे कांग्रेस के शासनकाल में, न ही महिला मुख्यमंत्रियों और न ही लोकसभा की महिला अध्यक्षों के परिणामस्वरूप भारतीय महिलाओं की स्थिति में कोई महत्वपूर्ण सुधार हुआ है। ये महिला प्रतिनिधि भी पार्टी के अनुशासन से बंधी होंगी और अपने विवेक के बजाय अपनी पार्टी के व्हिप के अनुसार बोलेंगी और मतदान करेंगी। मुजफरनगर दंगों के दौरान भी सत्तर से अधिक मुस्लिम विधायक अप्रभावी साबित हुए थे। वर्तमान लोकसभा की 78 महिला सदस्यों में से अधिकांश महिला एथलीटों के लिए नहीं बोल सकीं जब वे यौन उत्पीड़न और हमले का विरोध कर रही थीं। सरकार को चुनावी लाभ हानि के गणित से हटकर प्रभावी नीति के अनुसार महिला आरक्षण को लागू करना होगा ताकि महिला सशक्तिकरण की स्थिति में वांछित सुधार लाया जा सके।

डॉ० महेन्द्र सिंह मलिक, आई.पी.एस. (सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महा निदेशक हरियाणा,
प्रधान अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति व
जाट सभा, चंडीगढ़ व पंचकूला एवं
चेयरमैन, चौ० छोटूराम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

– जयपाल सिंह पूनियां, एम.ए. इतिहास,
वन मंडल अधिकारी (सेवानिवृत)

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का जन्म 12 फरवरी, 1824 ई. में गुजरात के टंकारा नामक स्थान पर हुआ था। स्वामी जी आधुनिक भारत के महान चिन्तक, समाज सुधारक तथा आर्य समाज के संस्थापक थे। इनके बचपन का नाम 'मूलशंकर' था। उन्होंने वेदों के प्रचार और आर्यावर्त को स्वतंत्रता दिलाने के लिए मुम्बई में आर्य समाज की स्थापना की। वे एक महान सन्यासी एवं चिन्तक थे। उन्होंने वेदों की सत्ता को हमेशा सर्वोपरि माना। "वेदों की ओर लौटो" यह उनका प्रमुख नारा था। स्वामी दयानन्द ने वेदों का भाष्य किया इसलिए उन्हें महर्षि कहते हैं क्योंकि वेदों का सरल उचारण केवल ऋषियों द्वारा ही किया जाता रहा है। स्वामी जी ने कर्म सिद्धान्त, पुर्नजन्म, ब्रह्मचर्य तथा सन्यास को अपने दर्शन के चार स्तम्भ बनायें। उन्होंने ही सबसे पहले 1876 ई. में स्वराज का नारा दिया था जिसे बाद में लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने आगे बढ़ाया। प्रथम जनगणना के समय स्वामी जी ने आगरा से देश के सभी आर्य समाजियों को यह सन्देश भिजवाया था कि सभी सदस्य अपना धर्म सनातन धर्म लिखवायें क्योंकि हिन्दु शब्द विदेशीयों की देन है और फारसी भाषा में इसका अर्थ चारों और डाकू है। स्वामी जी के विचारों से अनेक महापुरूष प्रभावित हुए जिनमें भिकाजीकामा, भगत सिंह, पं. लेखराम आर्य, स्वामी श्रद्धानन्द, चौ. छोटूराम, पं. गुरूदत्त विधायी, श्यामजी कृष्णा वर्मा, विनायक दामोदर सावरकर, लाला हरदयाल, मदनलाल ढ़ीगरा, रामप्रसाद बिसमिल, महादेव गोविन्द रानाडे, महात्मा हंसराज, ला. लाजपतराय इत्यादि। ला. हंसराज ने 1886 में लाहौर में दयानन्द एंग्लों वैदिक कालेज की स्थापना की। स्वामी श्रद्धानन्द ने 1901 ई. में हरिद्वार के निकट कांगड़ी में गुरूकुल की स्थापना की।

स्वामी जी के पिता का नाम कृष्ण जी लालजी तिवारी था और मां का नाम यशोदा बाई था। उनके पिता एक टैक्स कलैक्टर होने के साथ ब्राह्मण परिवार के एक अमीर, समृद्ध और प्रभावशाली व्यक्ति थे। पण्डित बनने के लिए वे संस्कृत, वेद, शास्त्रों व अन्य धार्मिक पुस्तकों के अध्ययन में लग गए। उनके जीवन में ऐसी बहुत सी घटनाएं हुई, जिन्होंने उन्हें हिन्दु धर्म की पारम्परिक मान्यताओं और ईश्वर के बारे में गम्भीर प्रश्न पुछने के लिए विवश कर दिया। एक बार शिवरात्रि की घटना है। तब वे बालक ही थे। शिवरात्री के उस दिन उनका पूरा परिवार मन्दिर में ही रूका हुआ था। रात्री का जागरण चल रहा था। परिवार के सो जाने के बाद भी वे जागते रहे कि भगवान शिव आयेंगे और प्रसाद ग्रहण करेंगे। उन्होंने देखा कि शिवजी के लिए रखे भोग को चूहे खा रहे हैं। यह देखकर स्वामी जी बालक के रूप में बहुत आश्चर्यचकित हुए और सोचने लगे कि जो ईश्वर स्वयं को चढ़ाये गए प्रसाद की रक्षा नहीं कर सकता वह मानवता की क्या रक्षा करेगा? अपने पिता जी से इस बात पर उन्होंने बहुत बहस की और तर्क दिया कि ऐसे असहाय ईश्वर की हमें उपासना नहीं करनी चाहिए। अपनी छोटी बहन और चाचा की जैसे मृत्यु होने पर जीवन मरण के प्रश्न पर चिन्तन करने लगे तो माता–पिता ने बाल्य अवस्था में उनका विवाह करने का निर्णय किया। 19वीं शताब्दी में बाल विवाह की आम प्रथा थी। लेकिन बालक मूलशंकर ने निश्चय किया कि विवाह उनके लिए नहीं बना है और 1846 में वे सत्य की खोज में निकल पड़े।

ज्ञान की खोजः– फाल्गुन कृष्ण संवत 1895 में शिवरात्री के दिन उनके जीवन में एक नया मोड़ आया। उन्हें नया बोध हुआ। वे घर से निकल पड़े और यात्रा करते हुए, वह गुरू विरजानन्द के पास पहुंचे। गुरू जी ने उन्हें पाणिनी व्याकरण, पांतजल–योगसूत्र तथा वेद–वेदांग का अध्ययन कराया। गुरू दक्षिणा में उन्होंने कहा कि विद्या को सफल करके दिखाओं, परोपकार करो, सत्य शास्त्रों का उद्धार करो, मत मतांतरो की अविद्या को मिटाओं, वेदों के प्रकाश से इस अज्ञान रूपी अन्धकार को दूर करो, वैदिक धर्म का अलोक सर्वत्र विकीर्ण करो।

यही तुम्हारी गुरूदक्षिणा है। महर्षि दयानन्द जी ने अनेक स्थानों की यात्रा की। उन्होंने हरिद्वार में कुंभ के समय पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराई। उन्होंने अनेक शास्त्रार्थ किए। वे कलकता में बाबू केशवचन्द्र सेन तथा देवेन्द्र नाथ ठाकुर के सम्पर्क में आए। वहीं से उन्होंने पूरे वस्त्र पहनना व हिन्दी में बोलना लिखना प्रारम्भ किया। यहीं पर ही उन्होंने वायसराय को कहा था कि विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदाई नहीं है।

आर्य समाज की स्थापनाः– ओऊम का आर्य समाज में ईश्वर का सर्वोत्तम और उपयुक्त नाम माना जाता है। महर्षि दयानन्द ने चैत्र शुकला प्रतिपदा संवत् 1932 (सन् 1875) को गोरे गांव मुम्बई में आर्य समाज की स्थापना की। संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उदेश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

वैचारिक आन्दोलनः– वेदों को छोड़कर अन्य धर्मग्रन्थ का प्रमाण नहीं है। इस सत्य का प्रचार करने के लिए स्वामी जी ने पूरे देश का दौरा किया और जहां–जहां गए प्राचीन परम्परा के पंडित उनसे हार मानते गए। संस्कृत भाषा का उन्हे बहुत ज्ञान था। संस्कृत में वे धारा प्रवाह बोलते थे। साथ ही वे तर्किक भी थे। उन्होंने ईसाई और मुस्लिम धर्मग्रन्थों का भी गहन अध्ययन किया और अपने चेलों से मिलकर सनातन धर्म के हक में तीन–तीन मोर्चों पर संघर्ष आरम्भ किया। दो मोर्चें तो ईस्लाम व ईसाई और तीसरा मोर्चा सनातनी हिन्दुओं का था। स्वामी जी ने बुद्धिवाद की जो मशाल जलाई थी, उसका कोई जवाब नहीं था। मगर सत्य यह था कि पौराणिक ग्रन्थ भी वेद आदि शास्त्र में आते है। सन् 1872 ई. में स्वामी जी कलकता पधारे। वहां देवेन्द्र नाथ ठाकुर और केशवचन्द्र सेन ने उनका बड़ा सत्कार किया। ब्राह्मण समाजियों से उनका विचार विमर्श भी हुआ किन्तु ईसाई मत से प्रभावित ब्राह्मण समाजी विद्वान पुर्नजन्म और खेद की प्रामाणिकता के विषय में स्वामी जी से एकमत नहीं हो सके। कलकता में ही केशवचन्द्र सेन ने स्वामी जी को यह सलाह दी कि यदि आप हिन्दी में बोलना आरम्भ कर दें तो देश का बहुत भला हो सकता है।

10 अप्रैल 1875 ई. को उन्होंने मुम्बई में आर्य समाज की स्थापना की। मुम्बई से लौटकर स्वामी जी इन्द्रप्रस्थ आए। वहां तीनों धर्मों की मिटिंग बुलाई लेकिन कोई सही परिणाम ना निकलने पर वे पंजाब आए यहां लोगों में आर्य समाज के प्रति उत्साह जागृत हुआ। समस्त कृषक समाज ने आर्य समाज के नियमों को अपनाया, क्योंकि कृषक समाज हमेशा पांखण्डवाद के विरूद्ध रहा है। ब्रह्मणों में आर्य समाज के नियम इसलिये नहीं माने क्योंकि ब्राह्मण तो पांखण्डवाद के जन्म दाता रहे हैं।

समाज सुधार के कार्यः– स्वामी जी ने तत्कालीन समाज में फैली व्याप्त कुरीतियों तथा अन्धविश्वासों और रूढ़ीवादी बुराईयों का खण्डन किया जिससे वे सन्यासी योद्धा कहलाएं। वे दलितों के उद्धार के पक्षधर थे। उन्होंने स्त्री शिक्षा के लिए आन्दोलन चलाएं। बाल–विवाह व सतीप्रथा का प्रबल विरोध किया महर्षि दयानन्द समाज सुधारक तथा धार्मिक पुर्नजागरण के प्रवर्तक तो थे ही, वे ब्रह्मचर्य का पालन न करना, विधान पढ़ना–पढ़ाना, बालविवाह, विषयशक्ति, मिथ्या भाषावाद, कुलक्षण वेदविद्या का मित्थमिथ्या अर्थ करना आदि कुकर्म है। आपस में भाई–भाई लड़ते हैं तो तीसरा पंच बनकर फायदा उठाता है। इस तरह की बुराईयों से बचने हेतू सार्थक प्रचार किया गया। सन् 1857 ई. की क्रांति की रूपरेखा भी स्वामी जी के घर पर ही तैयार हुई थी। अपने प्रवचनों में लोगों को राष्ट्रवाद का प्रचार करते थे। 1857 ई. के हरिद्वार कुम्भ के समय स्वामी जी ने आबू पर्वत से हरिद्वार तक पैदल यात्रा की थी। स्वामी दयानन्द जी ने हरिद्वार पहुंचकर एक पहाड़ी पर अलग स्थान पर डेरा जमाया। वहीं पर उन्होंने पांच ऐसे व्यक्तियों से मुलाकात की जो आगे चलकर 1857 की क्रान्ति के कर्णधार बने। इनमें नाना साहब, अजीमुला खां, बाला साहब, तात्यांटोपे तथा बाबू कुवंर सिंह प्रमुख थे। अंग्रेजों को भी स्वामी जी ने करारा जवाब दिया था।

स्वामी दयानन्द के बारे महापुरूषों के विचारः–

1. डॉ. भगवानदास ने कहा था कि स्वामी दयानन्द हिन्दु पुर्नजागरण के मुख्य निर्माता थे।
2. श्रीमती एनी बेसेन्ट का कहना था कि स्वामी दयानन्द पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने आर्यावर्त (भारत) भारतीयों के लिए घोषणा की।
3. सरदार पटेल के अनुसार भारत की स्वतंत्रता की नींव वास्तव में स्वामी दयानन्द ने ही डाली थी।
4. पट्टाभि सितारमैया का विचार था कि गांधी जी राष्ट्रपिता है पर स्वामी दयानन्द राष्ट्र पितामह हैं।
5. फ्रैंच लेखक रोमा रोला के अनुसार स्वामी जी राष्ट्रीय भावना और जन–जागृति को क्रियात्मक रूप देने में प्रगतिशील थे।
6. एक फ्रैंच लेखक रिचर्ड का कहना है कि ऋषि जी का प्रादुर्भाव लोगों को कारागार से मुक्त कराने और जातिबन्धन तोड़ने के लिए हुआ था। उनका आदर्श था आर्यवर्त (भारत) उठ, जाग, आगे बढ़। समय आ गया है नये युग में प्रवेश कर।
7. स्वामी जी बाल गंगाधर तिलक को स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार का नारा दे गए।

8. नेता जी सुभाष चन्द्र बोस ने स्वामी जी को आधुनिक भारत का निर्माता माना।
9. अमेरिका की मदाम ब्लेवेटस्की ने आदिशंकराचार्य के बाद बुराई पर सबसे निर्भिक प्रहारक माना।
10. सैयद अहमद खां के शब्दों में स्वामी जी ऐसे विद्वान और श्रेष्ठ व्यक्ति थे जिनका अन्य मतों वाले भी आदर करते थे।
11. वीर सांवरकर ने कहा महर्षि दयानन्द 1857 के संग्राम के सर्वप्रथम योद्धा थे।
12. लाला लाजपतराय ने कहा कि स्वामी दयानन्द ने हमें स्वतंत्र विचारना, बोलना और कर्तव्य पालन करना सिखाया।

स्वामी जी लेखक के रूप में :– स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने कई धार्मिक व समाजिक पुस्तकें लिखी। प्रारम्भ में संस्कृत में लिखी। उसके बाद में हिन्दी में लिखने लगे। हिन्दी को आर्य भाषा घोषित किया गया। उत्तम लेखन के लिए आर्य भाषा का प्रयोग करने वाले स्वामी जी अग्रणी व प्रारम्भिक व्यक्ति थे।

स्वामी जी ने अनेकों ग्रन्थ लिखे और चारों वेदों का सरल भाषा में अनुवाद किया। जिनका वर्णन निम्न प्रकार से हैः–

सत्यार्थ प्रकाश ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद विषय सूची।

सन् 1881 ई. में गोकरूणानिधि नामक पुस्तक प्रकाशित की, जो कि गोरक्षा आन्दोलन को स्थापित करने में बहुत सहायक सिद्ध हुई।

आर्योदेश्यरनमाला, व्यवहारभानू, स्वीकारपतर।

संस्कृत वाक्य प्रबोधः– यह संस्कृत सिखाने वाली पुस्तिका है।

मृत्युः– स्वामी जी की मृत्यु 10 अक्तूबर 1883 ई. में दीपावली के दिन संध्या के समय हुई। उन दिनों वे जोधपुर महाराजा श्री जसवन्त सिंह के निमन्त्रण पर गए हुए थे क्योंकि महाराजा जसवंत सिंह उनके चरणों में बैठ कर स्वामी जी के प्रवचन सुनते थे। वहां धर्म के ठेकेदार पाखण्डी ब्राह्ममणों के षड़यन्त्र के शिकार हुए, उनको भोजन में विष दे दिया गया। उसके बाद जोधपुर अस्पताल में जहर से ही मृत्यु हुई।

डॉ0 एम.एस. मलिक एक महान शख्सियत, आई.पी.एस., भूतपूर्व डी.जी.पी.(सेवानिवृत)

– बी.एस. गिल, सचिव
जाट सभा

मानवता व सामाजिक भाईचारा की प्रखर आवाज, उच्चकोटि के विचारक व लेखक डॉ० एम.एस. मलिक जी का खेल व सामाजिक क्षेत्र में अतुल्य योगदान है। भारतीय सेना व प्ै प्रशासनिक सेवा के शीर्ष पदों पर रहकर देश की सेवा की। "मानव अधिकार व सुरक्षा बल" शोध पर चीण्क्ण प्राप्त की। निड़ानी का खेल स्कूल आपकी उच्च सोच का परिचायक है। चण्डीगढ़ व पंचकूला एवम् कटरा (जम्मू–निर्माणधीन) बहुउपयोगी भवन आपके अच्छे प्रयासों की देन है। हरियाणा के गांव शामलौं कलां (जीन्द) में16 अक्टूबर, 1946 (01–01–1947) कोभरत सिंह गलिक के पावन संस्कारी आंगन में एक बालक ने जन्म लिया, जिसने आगे चलकर अपने गांव, जिला, प्रदेश व देश का नाम विश्व स्तर पर गौरवान्ति किया जिसे समस्त विश्व डॉ. महेन्द्र सिंह मलिक के नाम से सम्मानपूर्वक जानता है।

प्रारम्भिक शिक्षा गांव के ही विद्यालय में तथा उच्च शिक्षा राजकीय महाविद्यालय जीन्द तथा कुरुक्षेत्र में प्राप्त की।ग्रामीण आंचल से जुड़े होने के कारण कुश्ती में स्वाभाविक रूप से रूचि रही जैसा कि उस समय अधिकांश खेल में रूचि रखने वाले विद्यार्थी अध्ययन में औसतन ही रहते थे। इस भ्रांति पूर्वक चुनौती को स्वीकार करते हुए डा. महेन्द्र सिंह मलिक ड़िघाना उच्च विद्यालय के कुल 42 विद्यार्थियों में से उत्तीर्ण मात्र 2 विद्यार्थियों में से एक रहे। लग्न के पक्के डॉ. महेन्द्र सिंह मलिक जब महाविद्यालय में प्रवेश हेतू गये तब तत्कालीन प्राचार्य श्री एस.एन. राव ने उनकी शिक्षा सम्बन्धि उपलब्धि व भविष्य की शिक्षा के लिए ताना मारा। धुन व लग्न के पक्के छात्र महेन्द्र सिंह मलिक ने उसी दिन उसे ताना या बोली को चुनौती के रूप में लिया व शिक्षा के क्षेत्र में कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा और अपनी छात्र जीवन की

उपलब्धियों से न केवल तत्कालीन प्राचार्य महोदय को अपितु पूरे परिवेश को सुखद आश्चर्यचकित कर दिया।

शिक्षा के दम पर ही उस समय सन् 1966 में अपनी मेहनत से 2nd Lieutinent के रूप में मर्ती हुए। दिनांक 23–6–1968 को 2nd Lieutinent के रूप में सेवा प्रारम्भ करने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

इसके बाद उन्होंने आईएएस की परीक्षा दी जिसमें इनको आई.पी.एस. चयनित होने की सफलता मिली। इसके बाद उन्होंने हरियाणा राज्य कैंडर मिला, जहां ये पहले एस.पी. फिर एस.एस.पी के पदों पर रहे। बाद में इनको हरियाणा का डी.जी.पी. लगा दिया गया। इन्होंने अच्छे से प्रशासन चलाया और राज्य में चैन अमन व शान्ति स्थापित की। इनकी अच्छी सेवाओं व अच्छी कार्यप्रणाणी के लिये उल्लेखनीय कार्यों के लिए कभी महामहिम राष्ट्रपति महोदय तो कभी माननीय प्रधानमन्त्री जी द्वारा स्वाधीनता दिवस व गणतन्त्र दिवस पर सम्मानित किया गया जो कि पूरे क्षेत्र के लिए गर्व की बात है।

सेवा कार्य के ऐसे दायित्वों के साथ–साथ खेलों विशेष रूप से कुश्ती के प्रति समर्पण व यूँ कहिये कि कुश्ती विकास के लिए जनून लगातार रहा और जब भी अवसर मिलता अथवा परिस्थितियां अनुकूल होती अपने इसी जज्बे और जन्नुन के कारण कुश्ती के विकास के लिए कुछ न कुछ करते ही रहते हैं।

इसी के अनुरूप गांव निडाणी जिला जीन्द में युवा सरपंच चौ दलीप सिंह के नेतृत्व में मलिक साहब ने चौ. भरत सिंह, मैमोरियल खेल स्कूल निड़ानी तथा भाई सुरेन्द्र सिंह मैमोरियल कन्या विद्ययालय की स्थापना की।

डॉ० महेन्द्र सिंह मलिक, पूर्व पुलिस महानिदेशक, श्रीमती कृष्णा मलिक अध्यक्षा के अनुभवी और कुशल मार्गदर्शन व श्री दलीप सिंह पूर्व सरपंच के सतत् निश्काम सेवाभाव के फलस्वरूप दोनों स्कूलों के छात्र/छात्राओं ने पढ़ाई के साथ राष्ट्रीय/अर्न्ताष्ट्रीय और ओलम्पिक खेलों में मैडल जीत कर लाए। जिन के लिए इन खिलाड़ियों में तीन को भारत के राष्ट्रपति द्वारा अर्जुन अवार्ड से नवाजा गया।

डॉ. महेन्द्र सिंह मलिक जी के मार्गदर्शन में दोनों स्कूल के छात्र/छात्राओं व खिलाड़ियों के अभ्यास रूपी तपस्या करते हुये न केवल मां भारती के क्रीड़ा ध्वज में विश्व प्रतियोगिताओं के 70 से अधिक स्वर्ण पदक लगाकर आभासित किया है, अपितु इन्हीं विद्यालयों के खिलाड़ियों व मेधावी छात्र–छात्राओं ने अपनी प्रतिभा के आधार पर Haryana Police, जल–थल नभ तीनों सेनाओं में, अर्द्ध सैनिक बलों CRPF, CISF, BSF, Indo-Tibetin Border Police, Punjab Police, Air Lines, Indian Railways आदि अनेक संस्थाओं में 1000 से ज्यादा सेवारत रहते हुए राष्ट्र के सशक्तिकरण में अपना अतुलनीय योगदान दे रहे है।

उपरोक्त संस्थाओं को कुशलपूर्व मार्गदर्शन के साथ–साथ हाल ही में एक डिफैन्श ट्रैनिंग संस्था भी खोली हे जिसके पहले ही बैच में 15 छात्र एन.डी.ए में भर्ती हो गए हैं। पूर्व महानिदेशक पुलिस, हरियाणा आज भी कई वर्षो से जाट सभा चण्डीगढ़/पंचकूला तथा चौ० छोटूराम सेवा सदन, कटड़ा, जम्मू के एक सफल प्रधान होने के साथ–साथ अन्य कई समाजिक व लोकहित संस्थाओं तथा किसान हितकारी संगठनों के भी प्रधान/अध्यक्ष है। प्रधान की अच्छी और साकारात्मक सोच के कारण ही सभी संस्थाएं सफलतापूर्व कार्यरत व प्रगतिशील हैं। हम सभी आप के आर्दश व्यवहार, सेवा कार्यों व उच्च विचारों की सहराना करते हुये दीर्घायु की कामना करते है।

कहावत है कि प्रतिमा किसी के छुपाये नहीं छुपती है। इसी के अनुरूप डॉ. एम. एस. मलिक जी की संगठनात्मक नेतृत्व की प्रतिमा व क्षमता को देखते हुए उच्च से उच्चतर एवं उच्चतर से उच्चतम दायित्व कुश्ती कल्याण के लिए सौंपे गये जिनमें वर्ष 1985 में हरियाणा कुश्ती संघ का प्रधान, वर्ष 1987 में भारतीय कुश्ती संघ के सम्मानित वरिष्ठ उपाध्यक्ष, वर्ष 2001 में प्रतिष्ठित भारतीय कुश्ती संघ के माननीय प्रधान/अध्यक्ष, एशियन कुश्ती संघ के उप–प्रधान विश्व कुश्ती संघ के सम्मानित सदस्य, कुश्ती के अतिरिक्त अन्य खेल हॉकी–वॉलीवाल, एथलेटिक्स आदि खेलों के संगठनों में महत्वपूर्ण दायित्व मिला जिसका डॉ. साहब ने सदैव की भांति सफलतापूर्वक निर्वहन किया। इस प्रकार डॉ० महेन्द्र सिंह मलिक, आई. पी.एस./डी.जी.पी. (सेवानिवृत) अपने सारे जीवन में हर स्टेज पर समाज के लिये विशेषकर जाट समाज क लिये एक आर्दश व्यक्ति साबित हुए हैं। इनके अनुशासन में रहना भी बहुत पसन्द है इसलिये जाट सभा के साथ–साथ अन्य संगठन भी इनकी देखरेख में अनुसाशानात्मक से चल रहे हैं।

चौधरी महेंद्र सिंह टिकैत.एक विश्वसनीय शख्सियत

– लक्ष्मण सिंह फौगाट

भारत की किसान राजनीति के नेता चौधरी महेंद्र सिंह टिकैत बेदाग, स्पष्टवादी, दबंग छवि की शख्सियत के व्यक्ति थे, जिन्होंने एक मौजूदा प्रधानमंत्री से रिश्वत से जुड़ा सवाल पूछ लिया था। वो ऐसे किसान नेता थे जो सरकारों तक नहीं जाता था, सरकारें खुद चलकर उनके पास आती थीं...

पी. वी. नरसिम्हा राव सरकार के दौरान हर्षद मेहता कांड हुआ, जिसने राजनीतिक गलियारे में तूफान ला दिया। चौधरी साहब की नरसिम्हा राव जी से ठीक ठाक दोस्ती थी। वे जब चाहते थे मिल लेते थे। उस दौरान कांग्रेस पार्टी राव साहब में आस्था व्यक्त कर रही थी और समर्थकों की भीड़ को तो ऐसा करना ही था। चौधरी साहब उसी दौरान किसानों की समस्या को लेकर प्रधानमंत्री से मिले तो उनसे सीधे पूछ लिया कि क्या आपने एक करोड़ रुपया लिया था?

आजादी के बाद भारत की किसान राजनीति के वे सबसे बड़े किसान नेता थे। वैसे तो आजादी के पहले1917 के बाद कई किसान आंदोलन हुए और महात्मा गांधी, पंडित जवाहर लाल नेहरू, सरदार वल्लभ भाई पटेल से लेकर स्वामी सहजानंद और प्रो. एनजी रंगा जैसे दिग्गज भी उससे जुड़े रहे। आजादी के बाद तमाम इलाकों में किसान संगठन बने और किसानों के कई बड़े नेता उभरे। उस समय किसानों के हितों की कोई पूछताछ नहीं कर रहा था। उन्होंने ऐसे दौर में किसानों को संगठित किया और उनकी आवाज बने जिस समय किसानों को संगठन की सबसे अधिक जरूरत थी। वे जीते जी किसानी की मिशाल बन गए थे। किसानों का ये दिग्गज नेता अपनी सादगी के लिए भी जाना जाता था, वो किसानों के बीच बैठकर खाना खाते थे, आंदोलनों के दौरान भीमंच के बजाए किसानों के बीच बैठते थे। मेरठ आंदोलन से लेकर दिल्ली के बोट क्लब की महापंचायत तक किसान समूह के बीच मिलकर संघर्ष किया। 15 मई 2011 को 76 साल की आयु में उनका निधन हुआ। 15 मई को चौधरी साहब की पुण्य तिथि के रूप में याद किया जाता है। आगे उनके लड़के राकेश चौधरी टिकैत के नेतृत्व में भारत में तीन काले कृषि कानूनों के विरोध में किसानों का जो आंदोलन खड़ा हुआ उसने भारत ही नहीं पूरी दुनिया पर असर डाला। इस एतिहासिक आंदोलन में चौ. साहब ने आखिर पड़ाव तक एक दबंग सिपाही की तरह किसानों का हौसला बढ़ाया व मार्ग दर्शन किया जिस कारण हठधर्मी सरकार को झुकना पड़ा। वही अकेला आंदोलन था, जिसमें विदेशी मीडिया हैरानी के साथ मेरठ, गंगा नहर के किनारे भोपा, सिसौली, शामली और दिल्ली बोर्डर पर पहुंच कर इस संगठन और करिश्माई व्यक्तित्व के तमाम पहलुओं की तलाश करती हुई पायी गयी। चौधरी टिकैत ही है जो ईमानदारी किसानों के लिए खड़े रहे किसानों के आगे कई बार सरकारों को झुकने पर मजबूर करने वाले किसान नेता के रूप मेजाने जाते थे। महेंद्र सिंह टिकैत उदारीकरण की आंधी से किसानों को काफी हद तक बचाया। चौधरी टिकैत के नेतृत्व में किसान आंदोलन ने दो अहम उपलब्धियां हासिल की है। पहला यह कि किसानों के संगठन मे उदारीकरण की आंधी में खेती बाड़ी और भारत के कृषि क्षेत्र को एक हद तक बचा लिया। नीतियों में बदलाव के नाते यह क्षेत्र बेशक प्रभावित हुआ लेकिन ऐसा नहीं जैसा विश्व व्यापार संगठन या बड़े देश चाहते थे। भारत सरकार को किसानों की समस्याओं के नाते कई मोरचों पर झुकना पड़ा। इसके लिए टिकैत दिल्ली ही नहीं विदेश तक आवाज उठाने पहुंचे और जब एक मुस्लिम युवती को न्याय दिलाने के लिए छेड़ा आंदोलन दूसरी अहम बात यह थी कि टिकैत ने उत्तर प्रदेश के पश्चिमी अंचल और समग्र रूप से पूरे राज्य में किसानों को जाति और धर्म में बंटने नहीं दिया। किसान आंदोलन के सबसे अहम पड़ाव यानि करमूखेड़ी बिजलीघर पर हुए पुलिस गोलीकांड में दो नौजवानों जयपाल और अकबर की शहादत को भाकियू ने कभी नहीं भुलाया। उनके नेतृत्व में हुए अधिकतर विशाल पंचायतों की अध्यक्षता सरपंच एनुद्दीन करते थे और मंच संचालन का काम गुलाम मोहम्मद जौला 1967 में मेरठ में भयावह सांप्रदायिक दंगे हुए थे लेकिन टिकैत ने ग्रामीण इलाकों में एकता की मिसाल जलाए रखी। विरोधी हमेशा भारतीय किसान यूनियन (Bhartiya Kisan Union) को जाटों का संगठन बताते रहे, लेकिन अगर जमीन पर आप जाकर देखें तो पता चलता था कि जाट ही नहीं उस जमावड़े में समाज की पूरी धारा समाहित होती थी। उनका सफर आम किसान से महात्मा बनने का सफर था। उनकी आवाज को

हिंदू मुसलमान सभी सुनते थे और मानते थे। 1989 में मुजफरनगर के भोपा क्षेत्र की मुस्लिम युवती नईमा के साथ न्याय के लिए चौधरी साहब ने जो आंदोलन चलाया उसने एक अनूठी एकता का संकेत दिया। हुक्का भी टिकैत साहब का जीवनभर साथी रहा। चौधरी टिकैत के जीवन का सफर कांटों भरा 1935 में मुजफरनगर के सिसौली गांव में जन्मे चौधरी महेन्द्र सिंह टिकैत का पूरा जीवन ग्रामीणों को संगठित करने में बीता। भारतीय किसान यूनियन के गठन के साथ ही 1986 से उनका लगातार प्रयास रहा कि यह अराजनीतिक संगठन बना रहे। मेरठ के घेराव ने किसानों का संगठन और एकता की परिधि को व्यापक बना दिया और उनको एक ईमानदार नायक मिल गया था, जिसके साथ देश के करीब सारे छोटे बड़े किसान जुड़ कर एक झंडे तले आने के लिए उतावले थे। किसानों के हकों के सवाल पर राज्य और केंद्र सरकार से टिकैत की बार बार लड़ाई हुई। लेकिन उन्होंने आंदोलन को अहिंसक बनाए रखा। उनकी राह गांधी की राह थी और सोच में चौधरी चरण सिंह से लेकर स्वामी विवेकानंद तक थी। 110 दिनों तक चला रजबपुर सत्याग्रह हो या फिर दिल्ली में वोट क्लब की महापंचायत, फतेहगढ़ केंद्रीय कारागार हो या फिर दिल्ली की तिहाड़ जेल उनका जाना, हर आंदोलनों ने किसान यूनियन की ताकत का विस्तार किया। मंच नहीं हुक्का गुड़गुड़ाते भीड़ में बैठते थे टिकैत साहब टिकैत, दिल्ली–लखनऊ कूच का ऐलान करते तो सरकारों के प्रतिनिधि उनको मनाने रिझाने सिसौली रवाना होने लगते। लेकिन टिकैत जो चाहते थे करते वही थे। प्रधानमंत्री से लेकर मुख्यमंत्री तक उनके फोन को तरसते थे लेकिन यह उनकी ताकत का असर था जो उनकी सादगी, ईमानदारी और लाखों किसानों में उनके भरोसे के कारण थी।

आंदोलनों में भीड़ को नियंत्रित करना सरल नहीं होता। लेकिन चौधरी साहब ने आंदोलनों को अलग तरीके से चलाया। गांव से महिलाएं खाने पीने की सामग्री, हलवा, पूरी, छाछ, गुड़ इतनी मात्रा में भेजती थीं कि किसान ही नहीं पुलिस, पत्रकार और आम गरीब लोग सब खा पी लेते थे, कम नहीं पड़ता था। हर आंदोलन में टिकैत ने पूर्व सैनिकों को भी जोड़ लेते थे। मेरे मित्र और किसान आंदोलन के तमाम अहम पड़ाव को करीब से देखने वाले अशोक बाल्यान, नरेश सिराही से लेकर तमाम किसान हितैषियों को इस आंदोलन ने पैदा किये। हर आंदोलन में चौधरी टिकैत ने किसानों के वाजिब दाम को केंद्र मे रखा। जीवन भर वे किसानों की लूट के खिलाफ सरकारों को आगाह करते रहे। उनका यह कहना एक हद तक सही है कि अगर 1967 को आधार साल मान कर कृषि उपज और बाकी सामानों की कीमतों का औसत निकाल कर फसलों का दाम तय हो तो एक हद तक किसानों की समस्या हल हो सकती है। चौधरी देवीलाल से दोस्ती चौधरी साहब की एक बड़ी खूबी यह भी थी कि वे दोस्तों के दोस्त थे। अपना कितना भी नुकसान हो जाये इसकी परवाह नहीं करते थे। जब चौधरी देवीलाल को उप प्रधानमंत्री पद से बर्खास्त किया गया तो उनके हाथों मंत्री और मुख्यमंत्री पद तोहफे में पाने वाले भी दुबक गए थे। केवल चौधरी टिकैत थे जो अस्पताल में होने के बावजूद लगातार उनके पक्ष में खड़े रहे। वे केंद्र की सत्ता से इसके बावजूद टकराये कि उनको रोकने के लिए सरकार ने सभी संभव प्रयास किए थे। वे किसानों और ग्रामीण भारत के सच्चे हितैषी और दुरदृषी थे। 15 मई 2011 को 76 साल की आयु में उनका निधन हुआलेकिन किसान आंदोलन आज भी उनकी ही तरफ देखता है। उनको आज भी एक किसान मजदूर व कामगार के मसीहा के रूप में याद किया जाता है।

चौधरी छोटू राम के कुछ संस्मरण

– सूरजभान दहिया

अगर, बकलोल आइंस्टीन आने वाली वीडियो इस बात पर विश्वास नहीं करेगी कि गांधी के रूप में हार्ड मास्क का एक ऐसा पुतला कभी इस पृथ्वी पर चला था तो यह भी सच है कि आने वाली पीढ़ियां इस बात पर भी विश्वास नहीं करेगी कि इस देश में एक ऐसा जननायक भी हुआ था जिसने किसानों को शोषण से मुक्त कराया तो वह अब्राहीम लिंकन किसान की अगली पीढ़ी का किसान मसीहा हो गया। जिसने धार्मिक को अपने प्रांत में अंकुरित ही नहीं होने दिया तो वह शिकागो का स्वामी विवेकानंद हो गया, जिसने कुछ कृषक को उसकी छिनी खेती भूमि पुनः लौटाई तो वह माओ हो गया, जिसने एक जमींदारा पार्टी गठित करके एक सफल प्रयोग बनाकर प्रबल पार्टियों को अप्रभावी करके वह आधुनिक युग का अरस्तु विचारक हो गया यानी –Four in One दीनबंधु छोटू राम।

जब मैं अतीत में झांक कर देखता हूं तो चौधरी छोटू राम के संघर्षमय जीवन तथा महत्वपूर्ण घटनाओं की एक लंबी कड़ी लिखित व मौखिक के रूप में मेरे मन को प्रेरित कर जाती है। कुछ घटनाएं बहुत बड़ी तो, कुछ अति लघु परंतु मार्मिक, अब यह सभी इतिहास बन गई है। यहां मैं उनके छोटे–छोटे कृत्यआपसे सांझा करके आत्मसंतुष्टि का अनुभव करूंगा।

खेती दिन रात का धंधा है और इसमें किसान परिवार के हर सदस्य को जुड़ना पड़ता है। बाजरे की फसल पक चुकी थी और पक्षी अपना पेट भरने के लिए इसकी बालों से दाने निकालकर खा रहे थे। बालक छोटू राम को कहा गया कि वह बाजरे के खेत में जाकर पक्षियों को उड़ाये। वह खेत में जाकर डामचें पर खड़ा होकर गोफियों से पक्षियों को उड़ा रहा था। कुछ देर के बाद वह थक गया और डामचे से उतरकर डोले पर बैठकर कंक्कड़ से पहाड़े लिख लिखकर याद कर रहा था। अचानक उनके पिता वहां आ पहुंचे और छोटू को देखकर उस पर बड़ा गुस्सा हुए और जोर से बोले –छोटू! तैने तै सारा बाजरा चिड़िया को खवा दिया, अर तू डोल पर बैठकर मिट्टी ते खेल रहा सै,छोटूराम बोले – बापू! मैं तो पहाड़े याद कर रहा सू। दो दाणे चिड़ियांखां लेगी तै के होगा? यह सुनकर उनके पिता बोले– हराम के खांगे? छोटू राम बोले –बापू! यो सारा तै बाजरा बणिया ठा ले ज्यागा, हाम तै भूखे के भूखे रोज सोव्वै सै, उनके पिता ने उसे थप्पड़ मार दिया। उसी टाईम छोटू के काका राजे आ गए और बोले –भाई सुखी क्यो छोटू को मारण लागरे सों, सुखी बोल्या – अर यो राजे भी छोटू की वकालत करण नै आ गया।रोवते रोवते छोटू बोल्या –"बापू! वकालत तो मैं करूंगा अर हिसाब किताब भी देखूंगा। आप तौ लूण दो आने का, दो आने का लूण बणिया कै लिखवा कै आपणा गूठा पिसवाते–पिसवाते बुढ्ढे हो लिये – कर्जे पे कर्जा चढ़रा सै। आपतै चले जाओगे, यो कर्जा तै मै ऍं उतारूगां।"

चौधरी छोटू राम ने वकालत की पढ़ाई की और रोहतक कचहरी में आकर बैठ गए। जमीदार के कोर्ट में केस लड़ने लग गए। शहरी वकीलों को चुनौती देने लग गए जो शहरी वकीलो को नागवरा गुजरा। भगवतीपुर की एक राजपूत विधवा का कर्ज का केस कोर्ट में चौधरी छोटू राम ने लड़ा कोई 500 रुपये में मूलधन को नया चुकाने के कारण कोर्ट ने उसकी 200 बीघा जमीन नीलाम करने का फरमान सुना दिया। छोटू राम आग बबुला हो गये।"जज साहिब यह न्याय नहीं अन्याय है। अंधा कानून है और अंधा कोर्ट –इस सिस्टम को तो बदलना पड़ेगा।" यह रोहतक बार काउंसलिंग का ज्वलत किस्सा बन गया, कोर्ट की अवमानना का भी सवाल खड़ा हो गया। परंतु चौधरी छोटूराम ने ठान लिया –कानून तो मैं बदल लूंगा ही। 1937 में चौधरी छोटूराम की जमींदारा पार्टी सरकार बनी। एक झटके में चौधरी छोटूराम वजीर ने किसान विरोधी सारे कानून बदल डाले। पंजाब का किसान कर्जामुक्त व शोषण मुक्त हो गया। उसने पंजाब में नये सूरज को उदय होते देखा। अब आज के किसान की माड़ी हालत का अवलोकन कीजिए। 2014 में भारत के प्रति किसान पर 47000 का कर्ज था जो 2021 में 74000 हो गया। एक किसान है रोज सिर्फ अब 27 रुपए कमाता है उसे तो अच्छी दिहाड़ी मजदूर की है। मजबूरी में किसान आत्महत्या कर रहा है पर इस दर्दनाक गई जानो का सरकार संज्ञान ही नहीं लेती। किसान आत्महत्याओं के आंकड़े दर्ज करने ही बंद कर दिए हैं।यदि कोई किसान बैंक के कर्ज की किस्त नहीं चुका पाता तो उसे तुरंत नोटिस आ जाता है। परंतु सरकार कारपोरेट जगत पर मेहरबान हो जाती है उसके कर्ज तुरंत राइट ऑफ कर दिए जाते हैं। भारत अब Welfare State नहीं है यह तो Farewell(किसान) State बन गई है। सरकार क्या है government is the corporate, by the corporate and for the corporate. 140 करोड़ की आबादी का भारत देश को कार्पोरेटस को आधा–आधा बांट दिया है। किसान तो अब ढ़लते सूरज को देखकर जी रहा है, भारी संकट में है।

9 अप्रैल 1944 को लायलपुर में अखिल भारतीय वर्षीय जाट महासभा का सम्मेलन हुआ था उसमें चौधरी छोटू राम को रहबरे आजम के खिताब से सम्मानित किया गया था। इस अवसर पर चौधरी छोटू राम ने अपने संबोधन में कहा था जाटकौम ने सभी किसान जातियों को अपने साथ रखकर भूतकाल में अनेक देशों में शासन किया था। जाट एक बहादुर जनहितैषी कौम है, यह दूसरों के मसले भी अपने ऊपर ले लेती है पर वह इस माजरे को नहीं समझता।"जाट जाट को मारे, या मारे करतार" जाट को कोई नहीं मार सकता यदि यहएक जुट रहे। हमने जमींदारा पार्टी में सभी किसान जातियों को एकजुट किया है, इसलिए पंजाब में किसान राज है। भारत की 80 फीसदी से ज्यादा आबादी

किसानो की है, हम इसे एक जूट रखेंगे, भरोसा रखिए मुझ पर भारत में भी किसान राज होगा। आप चौधरी हो तो चौधर अपने पास सुरक्षित रखने की ठाणों, किसी को अपनी जमीन बेचकर पिछलग्गू न बनो। दूसरी पार्टियों आपको तरह–तरह के हथकंड़े अपना कर तोड़ेगी –नहीं टूटना, जिम्मेदार हो, जमींदारा पार्टी में बने रहकर अपने आपको गर्वित बनाए रखो।

आज जो किसानों की दुर्दशा बनी हुई है उसका केवल और केवल एक ही कारण हैकिसान का जाति, धर्म व क्षेत्र के आधार पर विभाजन। चौधरी छोटू राम किसानों को जो सम्मान देते थे ऐसा आगे किसी भी नेता ने नहीं दिया। एक बार चौधरी छोटू राम वजीर अंबाला के दौरे पर थे, वे सदा बी.एससराव आईसीएस (जिन्होंने चंडीगढ़ जाट सभा के लिए प्लॉट अलॉट किया था) के पिता के यहां ठहरते थे। अंबाला के एक अंग्रेज आईसीएस जो अंबाला डिवीजन के कमिश्नर थे, वहां चौधरी छोटू राम से मिलने पहुंचे। उनको चौधरी छोटू राम ने संदेश भेजा –"मैं अभी अपने मालिक को (किसानों का समूह) से आदेश ले रहा हूं कि वह मुझे क्या करने का हुकुम देंगे। जमीदार सरकार के वह स्वामी है और मैं उनका सेवक। मैं तुम्हें बाद में बुलाऊंगा, तुम मेरे कर्मचारी हो, प्रतिक्षा करो, मैं तुम्हें निर्देश तब दूंगा।" इस प्रकार के एक और विवरण का उल्लेख किया जा रहा है– एक जलसे में भजनो उपदेशक चौधरी पृथ्वी सिंह बेधड़क ने अंग्रेजी सरकार की एक भजन द्वारा खुलकर आलोचना की, जिसे सुनकर एक अंग्रेजी अफसर ने चौधरी बेधड़क को कहा कि – "तुरंत इसे बंद करो और बैठ जाओ।" यह सुनकर चौधरी छोटू राम ने उस अफसर को डांटते हुए कहा कि तुम मेरी उपस्थिति में इनके गाने को बंद कराने की हिम्मत कैसे कर बैठे। बेधड़क की जनता है जो टैक्स देती है जिससे आप अपना वेतन पाते हैं। जनता मालिक है आप नहीं। आप इसके नौकर हैं, अपनी औकात समझिए।

एक बार चौधरी छोटू राम जाट कॉलेज मुज्जफरनगर में एक सम्मेलन में मुख्य अतिथि थे। एक वक्त किसानों को शिक्षा क्षेत्र में प्रवेश करके ग्रामीण शिक्षा प्रसार हेतु प्रेरित कर रहे थे। इसके पश्चात वहां के डिप्टी कमिश्नर बोले वह कहने लगे कि किसानों को अपनी खेती तक ही सीमित रहना चाहिए उन्हें शिक्षा की क्या जरूरत है। किसान शिक्षा पाने में तो असक्षम है। फिर चौधरी छोटूराम बोले उन्होंने कहा किसान बड़े दक्ष है वीर है तथा सभी समुदाय के पथ पर दर्शन रहे हैं विश्व के बड़े भूभाग के शासक भी रहे हैं। मुझे तो डिप्टी कमिश्नर बड़े अज्ञानी लगे जिन्हें जाट कोम का इतिहास ही नहीं पता, मैं भी तो इसका का बेटा हूं। मुझे बड़ा आश्चर्य हो रहा है कि किसने आपको जिलाधीश बना दिया। बाद में ड्यूटी कमिश्नर ने समारोह में उपस्थित जनता से माफी मांगी।

ऊपर जो वर्णित किया उससे यही निष्कर्ष निकलता है कि चौधरी छोटू राम कमेरों और ग्रामीणों के हिट मैन एवं मर्यादा के कितने समर्थक थे। उन्होंने जो किसानों के लिए किया वह तो अब नव गीतासार बन चुका है। चौधरी छोटू राम दर्द प्रतिज्ञा किसान मसीहा जन्म आधारित धर्म जाति व्यवस्था के कठोर विरोधी निर्भीकता की सरकार मूर्ति जन संघर्ष से उपजे जननायक ईमानदार एवं कठोर प्रशासक कुशल राज नैतिक कृषि अर्थव्यवस्था एवं भू राजस्व कानून के मार्गसमाज सुधारक राज धर्म के सबसे पालक अन्याय एवं सत्य का प्रत्यक्ष स्थिति में विरोध करने वाले उसूलों पर कभी किसी से कोई समझौता न करने वाले, कट्टर आर्यसमाजी करोड़ के छोटे राम थे। बड़े राम से विनती है कि आज किसान का यहां कोई बारिश नहीं है वह छोटे राम को अपने अवतरित कर दें।

किसान मसीहा चौधरी छोटू राम को हमसे बिछड़े हुए 8 दशक होने को है वह 9 जनवरी 1945 को परलोक चले गए थे। 10 जनवरी 1945 रोहतक शहर उसे दिन अर्थात समुद्र था। नींव से शिखर तक सभी सत्रों के लोग मौजूद थे किसी किसान के एक पैर में लीतर था और एक बार नंगा, किसी की फटा पुराना मटियाला कुर्ता धोती, किसी दुखी दादा ताऊ के अधूरे बंदे खंडवें के दादी ताई काकियों के घुंघट से ढके मुंह, वहां थामे घिलाड़िया। सभी तो अश्रुरों के जलबहाव के साथ जाट स्कूल के ग्राउंड की ओर अग्रसर थे उसे महान जननायक के प्रति प्रतिज्ञा ज्ञापन और श्रद्धा सुमन अर्पित करने के लिए जिसने करोड़ों किसानों का मुकदर बदलने के लिए जीवन पर्यंत निस्वार्थ एवं अविरल संघर्ष किया और संपूर्ण सफलता पाई। जब उनकी चिता को अग्नि दी तो आज की ऊंची ऊंची लपेट हर नर नारी को महसूस कर रही थी कि दिवंगत किसान मसीहा की विरासत कौन संभालेगा यह प्रश्न आज भी यू का यों खड़ा है। पहले ही करोड़ों आत्माएं किसान मसीहा के पूनः अवतरित होने की

प्रतिज्ञा में है। लाहौर के शक्ति भवन तथा रोहतक के प्रेम भवन में सन्नाटा है चिंता है ठहराव है यह किसान मंदिर पहले की तरह गति में होने चाहिए।

मंजीठिया परिवार पुनः संकल्प ले रहा है कि जब 1881 में छोटे राम अवतरित हुए तो हमने किसान वाणी लाहौर से दि ट्रिब्यून पर प्रकाशित करके उन्हें जन्मदिन का उपहार दिया था। आज यह अखबार किसी ने हथिया लिया है। कोई बात नहीं है। हे छोटे राम पुनः आ जाओ आपको हम दिल्ली से "जागृत किसान आवाज" अखबार का अमूल्य जन्मदिन उपहार देंगे।

हरियाणा में दैनिक जीवन और धर्म

– मानव प्रदीप

हम हरियाणा के जिस इलाके में रहते हैं उसमें गांव में पूजा के मुख्य स्थलों में खेड़ा, पीर, सती तथा डेरे मुख्यतरू सामूहिक पूजा स्थलों के तौर पर सौ साल पुराने मिल जाते हैं। खेत में अपने पूर्वजों की मढ़ी परिवारों के व्यक्तिगत स्थानों के रूप में हैं। अधिकतर मंदिर पिछले 30–35 सालों में बनें हैं। जिन गांव में पुराने मंदिर हैं वो मुख्यतरू व्यापार के केंद्र रहे हैं तथा व्यापारी वर्ग का उन मंदिरों को बनवाने बड़ा योगदान है। इस क्षेत्र में गांवों में डेरे खूब मिल जाते हैं वो भी गांव की आबादी से दूरी पर हैं जो मुख्यतरू गिरी, पुरी संप्रदाय से संबन्धित संतों के हैं और ये भी बड़े गांवों में ज्यादा हैं। नाथ संप्रदाय के डेरों की विशेषता ये है कि इन्हे यहां पीर कहकर भी पूजा जाता रहा है।

इन बातों का जिक्र इसलिए कर रहा हू कि खेती किसानी पर निर्भर इस क्षेत्र में धर्म दैनिक जीवन के कामों का हिस्सा नहीं था। किसी त्यौहार पर, शादी ब्याह, जीवन मृत्यु से जुड़े अवसर पर धार्मिक विश्वास आस्थानुसार प्रचलन में रहा। दलित जातियों में मन्दिर की धारणा तो बनने ही नहीं दी गई थी, हां लेकिन डेरों की सेवा में दलित परिवारों की भागीदारी फिर भी दिखती थी। दलित परिवारों की बस्तियों में छोटी छोटी मढ़ी बना ली जाती थी या अक्सर त्यौहारों पर अस्थाई मढ़ी बनाने के उदाहरण रहे हैं। स्थितियों का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि मन्दिर, डेरों में चढ़ावा इतना कम था कि वहां रहने वाले बाबा, पुजारियों को भिक्षा लेने के लिए घर–घर जाना पड़ता था। परिवार अपनी क्षमताओं अनुसार दान दक्षिणा देते थे। बाबाओं, पुजारियों की स्थितियों और निर्भरता को बेहतर बनाने के लिए गांव वालों ने डेरे मंदिरों को जमीनें दान में दी जिनपर लगभग सभी जातियों के लोग कार सेवा करके धार्मिक काम का हिस्सा पूरा करते थे। मन्दिर, डेरों में रोज जाने वाले व्यक्तियों को बहुत बेहतर नहीं माना जाता था। काम करके खाने को ही सबसे बड़े धर्म के रूप में माना जाता था। जातियों में बंटे समाज में अपनी गंदगियो के बावजूद धार्मिक आडम्बरों के लिए बहुत ज्यादा स्वीकार्यता नहीं थी। भगवान के साथ ग्रामीण जीवन में रोज की जद्दोजहद थी जिसमें कभी राम से आस थी तो कभी राम को उलाहना था। राम यहां राजा का बेटा नहीं था। मेरा परिवार ब्राह्मण है लेकिन बावजूद इसके हमारे परिवार में भी त्यौहारों के मौके के अलावा पूजा का कॉन्सेप्ट नहीं था। एकाध परिवार को छोड़कर मुख्यतरू खेती करने वाले परिवार ही रहे ।

मुस्लिम परिवारों में भी पांच वक्ती नमाज यहां के समाज का हिस्सा कभी नहीं रही। सामूहिक धार्मिक आयोजन संकट की स्थिति में ज्यादा किए जाते थे। इस क्षेत्र में अधिकतर गांवों में पहली बार मंदिरों का निर्माण 25–30 साल पहले हुआ है। मेरा गांव पुराना व्यापारिक केंद्र रहा है इसलिए यहां पुराने मन्दिर हैं अन्यथा कुरुक्षेत्र भूमि का हिस्सा होने के बावजूद मंदिरों के प्रति समाज लंबे समय तक सुस्त ही रहा है। डेरों की स्थापना को अगर और गहराई से देखा जाए तो ये भी बड़े गांव या व्यापारिक केंद्रों के नजदीक ज्यादा मिलते हैं। धार्मिक यात्राओं का जिक्र जरूर मिलता है लेकिन वे भी बड़े बड़े परिवारों में इक्का दुक्का उदाहरण ही मिलते हैं ।

हरियाणा का इतिहास-प्रारम्भिक काल

वर्तमान हरियाणा राज्य, देश का वह भाग है जहाँ भारतीय संस्कृति अद्भुत, पल्लवित, विकसित एवं समृद्ध हुई है। इतिहास के प्रारम्भ में यहीं पर उन विचारों, मूल्यों एवं आदर्शों की स्थापना हुई है, जो प्रत्येक युग में भारतीय समाज तथा संस्कृति को दिशा प्रदान करते हैं। प्रागैतिहासिक काल के बाद इतिहास के प्रारम्भ में सर्वप्रथम हमारा परिचय भरत वंश से होता है। इस वंश के लोग भारत में आकर बस गये तथा इन्हीं के नाम पर इस देश का नाम पड़ा। एक पौराणिक

कथा के अनुसार भरतवंश का संबंध अनेक वीरगाथाओं के दुष्यंत और शकुन्तला के पुत्र भरत से है। कहा जाता है कि ऋग्वेद काल में सरस्वती (घग्गर) तथा दृषद्वती (चितंग) क्षेत्र में भरतवंश के लोग पावन यज्ञाग्नि प्रज्जवलित किया करते थे। अप्रिसूक्त में 'सरस्वती' को भारती अथवा भरतवंश का गौरव कहा गया है। यथासमय भरतवंश की तृत्सु जाति सर्वोच्च सत्ताधारी बन गई। इन्हीं के वंशज सुविख्यात विजेता दिवोदास तथा उसके पुत्र सुदास के पराक्रम का उल्लेख ऋग्वेद के अनेक सूक्तों में पाया जाता है। ऋग्वेद के दो सूक्तों (VI, 45, 1; IX, 61, 2) में यदुओं और तुर्वशों तथा दस्यु सरदार शमबरा से दिवोदास के युद्ध का उल्लेख पाया जाता है। एक अन्य उद्धरण में (VI, 61) सरस्वती के तट पर पर्वतों और वृक्षों से उसके युद्ध का वर्णन है। कहा जाता है कि उसने ऋजिश्वन, आयु और कुत्स के साथ मित्रता करके चुमुरि, धुनि, शमबर, स्मदीभ, प्रिप्रु, शुष्ण, वेतासु, दशोणि और तुग्र आदि अनेक सरदारों को पराजित किया। उसके पुत्र सुदास को लोगों के दो षड्यंत्रों का सामना करना पड़ा, एक तो यमुना के तट पर भेद के नेतृत्व में अजों, शिग्रुओं और यक्षुओं को और दूसरे रावी के तट पर सिम्यु, पुरोदास, पुरुकत्स तथा कवश के मार्गदर्शन में यदु–तुर्वशों, भृगुओं, द्रुह्युओं, पकथों, भलानसों, अलिनों, शिवों, विषाणिनों, पुरुओं और अनुसों का। परन्तु सुदास अपने पूर्व–पश्चिम के इन दोनों षड्यंत्रकारियों को मुकाबला करने में उसी प्रकार सफल हुआ जैसे के हरकुलस ने अपने दोनों हाथों से दो सांपों को कुचल दिया था। दस षड्यंत्रकारियों (दशराजन युद्ध) से उसका युद्ध विशेषतः रोमांचकारी था। जलमार्गों द्वारा बाढ़ग्रस्त रावी की धारा की दिशा बदल कर, इसे पार करने योग्य बनाने के प्रयत्न से उनके सात किलों पर आक्रमण करने की चाल चली। इस प्रकार अप्रत्याशित रूप से आक्रमण करके उसने सेना को कुछ ही समय में छिन्न–भिन्न करके उनके नेता पुरुकुत्स को बन्दी बना लिया। इस विजय से वह सम्पूर्ण सप्तसिंधु प्रदेश का सर्वोच्च शासक बन गया।

दिवोदास और सुदास के पराक्रमों के उल्लेख से प्रतीत होता है कि वे व्यापार, सूदखोरी और जमाखोरी द्वारा जनसामान्य का शोषण करने वाले पणिसों, नैचाशखों और किला वासियों के विरुद्ध लड़े। अतः उनका उत्थान तथा विस्तार एकाधिपत्य और मुनाफाखोरी के विरुद्ध लोकमान्य अभियान था। वे ऐसी नई सामाजिक व्यवस्था के प्रतिनिधि कहे जा सकते हैं, जिनमें जन–सामान्य, विशेषतया गांव, को विशेष महत्व दिया जाता था।

उल्लेखनीय है कि हड़प्पा और मोहनजोदड़ों के बड़े–बड़े शहर पश्चिमी पंजाब और सिन्ध में स्थित थे यद्यपि सौराष्ट्र के लोथल स्थान पर पतन–नगर का पता चला है और राजस्थान के कालीबंगान स्थान पर शहरी केन्द्र की खुदाई हो रही है। हरियाणा में भी इस सांस्.तिक परम्परा के नगरावशेष हो सकते हैं। यदि पूर्ण रूप से विचार किया जाये, तो पूर्वी पंजाब और हरियाणा तथा पश्चिमी उत्तर प्रदेश के स्थल अत्यंत नागरीय हड़प्पा सभ्यता की ह्रासोन्मुखी अवस्था को प्रदर्शित करते हैं। गत वर्ष कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग द्वारा पिपली के समीप दौलतपुर की आंशिक खुदाई करने पर ऐसा उपनिवेश प्रकाश में आया जहां के लोग अनाज की पैदावार करके उसका प्रयोग करते थे, मछली पकड़ते थे, तांबे के आभूषण बनाते थे और लाल सतह पर काले रंग के रेखिकीय डिजाइन वाले मिट्टी के बर्तन प्रयोग में लाते थेः अब तक के अध्ययन से पता चलता है कि हड़प्पा संस्कृति के नागरीय विकास की गति इस प्रदेश में बहुत धीमी रही। यद्दपि इसके निश्चित कारणों के विषय में कुछ कहना कठिन है तथापि अनुमान लगाया जा सकता है कि नागरीय सभ्यता में सन्निहित शोषण प्रवृत्ति के कारण लोगों में विरोध की भावना ने जन्म लिया। जैसा कि अन्यंत्र उल्लेख किया जा चुका है हड़प्पा–सभ्यता के ह्रास के पश्चात ही शहरी लोगों के निरन्तर बढ़ रहे शोषण को सह पाने में असमर्थ ग्रामीण लोगों में नवजीवन का संचार हुआ। (ऋग्वेद और सिन्धुघाटी सभ्यता पृष्ठ 95–97)। हड़प्पा संस्कृति के नगरों और सुदास का प्रमुख कार्यस्थल पूर्वी पंजाब और हरियाणा में रावी तथा यमुना के मध्य होने से पता चलता है कि उन्होंने इस प्रदेश के लोगों को बड़े–बड़े नगरों के सु.ढ़ दुर्गों में सुरिक्षत नागरीय लोगों के अत्याचारों के विरुद्ध उत्तेजित किया। आशा है का और अनुसंधान करहे पर इस अनुमान करने पर इस अनुमान को सप्रमाण निश्चित किया जा सकेगा।

संभ्भवतः द्वितीय सहस्राब्दी के आरम्भ में सुदास की महान विजय के पश्चात शक्ति हथियाने के लिये घोर संघर्ष आरम्भ हुआ। सुदास के उत्तराधिकारी अपने सहायकों और पुरोहितों, वाशिष्ठों से झगड़े पड़े और शक्ति नामक एक व्यक्ति को जला दिया। उसी समय सुदास के पराजित प्रतिद्वन्द्वी पुरुकुत्स के पुत्र और शक्ति नामक एक व्यक्ति को जिंदा जला दिया गया। उसी समय सुदास के पराजित प्रतिद्वन्द्वी पुरुकुत्स के पुत्र त्रासदस्यु ने पुनः शक्ति प्राप्त करके सरस्वती के तट पर तृत्शु राज्य पर आक्रमण कर दिया। आंतरिक तथा बाह्य

दबाव के कारण सुदास के उत्तराधिकारियों का प्रभाव कम हो गया। त्रासदस्यु के अधीन पुरु सरस्वती प्रदेश के शासक थे। वह, उसका पुत्र हिरणिन और अन्य वंशज तृक्षि, त्रयरुण और कुरुश्रावण प्रख्यात नरेश थे। इस दौरान पुरु वहां रहने वाले भरतों के साथ घुल–मिल गये तथा उन दोनों की जाति भी एक हो गई। उन्हीं लोगों में वैदिक संस्कृति का चरम विकास हुआ, जिसके परिणामस्वरूप उनकी भाषा सर्वोत्तम तथा विशुद्ध और उनकी बलि देने की विधि आदर्श तथा उत्कृष्ट समझी जाती थी। (पंचविंश ब्राह्मण XXV 10, शतपथ ब्राह्मण IV, 1, 5, ऐतरेय ब्राह्मण VII, 30)

कालांतर में पांचाल नामक लोगों के एक नये संगठन ने पौरक नरेश संवरण पर आक्रमण करके राज्य से निकाल दिया। वह और उसका परिवार सिंधु के तट पर शरण लेने पर विवश हो गया। (महाभारत 1, 80, 31–40)। वहां उसने वशिष्ठ को अपना पुरोहित बनाया और उनके मार्गदर्शन में अपना राज्य वापिस लेने का प्रयत्न आरंभ किया। प्रतीत होता है कि उसने उत्तर–पश्चिम में भारत–ईरानी प्रदेश में ख्याति प्राप्त कर रहे कुरुओं के साथ मैत्री करके उनकी सहायता से सरस्वती घाटी में अपना राज्य पुनः प्राप्त कर लिया। पुराणों के लेखकों ने इसे एक आख्यान का रूप देते हुए लिखा कि सवरण का सूर्य की पुत्री तापती से प्रेम हो गया। सवरण के पुरोहित वशिष्ठ ने तापती को सूर्य से लेकर संवरण से उसका विवाह कर दिया। उनसे कुरु का जन्म हुआ। उसी के नाम पर इस प्रदेश का नाम कुरुक्षेत्र पड़ा (वामन पुराण XXII, 26–61)। यह तो स्पष्ट ही है कि संवरण के विनाश के बाद कुरु वंश पुरु–भरत वंश का उत्तराधिकारी बना। इस कुरु वंश ने अपनी अर्थ–व्यवस्था को और अधिक सु.ढ़ करने के विचार से सरस्वती घाटी के विशाल भू–भाग को .षि योग्य बनाने की महत्वपूर्ण योजना बनाई। पुराण प्रणेताओं ने इसे भी आख्यान का रूप देते हुए लिखा है कि कुरु ने सरस्वती के तट पर सामंतपंचक नामक पांच वर्ग योजन क्षेत्र को .षि योग्य बनाने का निर्णय लिया और शिव के वृषभ और यम के भैंसे को स्वर्ण हल में जोत कर स्वयं हल चलाना आरंभ कर दिया। विष्णु द्वारा यह पूछे जाने पर कि यह क्या कर रहे हैं, उन्होंने उत्तर दिया कि वह सत्य, तप, क्षमा, दया, शौच, दान, योग और ब्रह्मचर्य आदि आठ सद्‌गुणों की साधना कर रहे हैं और इनके अंकुर उनके अपने शरीर में ही हैं। इस पर विष्णु ने वह बीज देने को कहा। उसने अपना दायां हाथ फैलाया। विष्णु ने इसके सहस्रों टुकड़े बनाकर लोगों में बांट दिए। तब उसने अपना बायां हाथ फैलाया और विष्णु ने उसी प्रकार इसे काट कर लोगों में बांट दिया। इसी प्रकार उसने उसके शरीर के अन्य भागों को काट दिया। इस बलिदान के परिणामस्वरूप यह प्रदेष हरा–भरा हो गया और यहां के लोग धन–धान्य से समृद्ध हो गए तथा ईश्वर स्वयं वहां निवास करने लगे और यह स्थल पवित्रतम स्थल 'धर्मक्षेघ्त्र' बन गया। यहां एक बार जाने से ही मोक्ष और परमानन्द प्राप्त होना निश्चित था। (वामन पुराण, XXIII, 23–33)। पौराणिक आख्यान के अलंकारों और प्रतीकों का वास्तविक अभिप्राय कुरुओं के माध्यम से हरियाणा का आर्थिक तथा नैतिक उन्नयन प्रदर्शित करना है। इससे पता चलता है कि उन्होंने सरस्वती तट के विस्तृत भू–भाग पर .षि आरंभ करके इसे प्रदेश की अर्थ–व्यवस्था का केंद्र–बिन्दु बनाया और यहां के लोगों के लिए उच्च नैतिक सिद्धांतों पर आधारित आचरण संहिता बनाई, जो आने वाले समय में उनके सांस्.तिक–विकास का आधार बनी। श्रम तथा सदाचार, शारीरिक आध्यात्मिक उन्नति का समन्वय इस प्रदेश और इसके द्वारा समस्त देश की संस्कृति का सारतत्व है। लौकिक तथा पारलौकिक मूल्यों का सामंजस्य ही भगवद गीता में प्रस्तुत किया गया है, जिसका वर्णन हम बाद में करेंगें।

बंजर धरती में हल चलाने वाले कुरु के हाथ सहस्रों लोगों के हाथ बन गये और उसके विचारों तथा सद्‌गुणों ने अनेक लोगों का मार्गदर्शन करते हुए उन्हें अनुप्राणित किया। उसके शरीर तथा मन का भाग तथा साकार रूप होने के कारण उसके समकालीनों तथा दायाधिकारियों ने लोहे के प्रयोग के कारण अत्यधिक सुसाध्य हो गई .षि को लोकप्रिय बनाया। इसके परिणामस्वरूप समस्त भू–भाग पर धन–धान्य से सम्पन्न गांवों तथा उपनिवेशों का विकास हुआ। मैंने अन्यत्र संकेत किया है कि कुरुक्षेत्र नाम से प्रसिद्ध हरियाणा तथा पश्चिमी उत्तर प्रदेश में संकेंद्रित चित्रांकित धूसर भांड संस्कृति कुरुओं से सम्बद्ध है। (ऋग्वेद तथा सिंधु घाटी की सभ्यताएं पृष्ठ 120)। यदि यह धारणा युक्तियुक्त हो तो यह स्पष्ट हो जाएगा कि कुरु वंश के लोग प्रायः कच्चे तथा मिट्टी के पलस्तर से बने ठाठ वाले घरों में रहते थे, .षि करते थे, पशु पालते थे और शिकार करते थे, भट्टी में अपचायक स्थिति में पकाये जाने के कारण धूसरवर्ण, हाथ से बने तथा चक्के पर बने बर्तनों, किंचित् उत्तल कटोरों, कम गहरी, नत तल तथा अथवा चपटे तल वाली तश्तरियों और लोटे जैसे बर्तनों का प्रयोग करते थे तथा तांबे और लोहे के औजार बनाते थे। घोड़ों

को पालतू बनाने और लोहे के प्रयोग से उनके व्यापार का विस्तार हुआ और वे समृद्ध होकर उत्तरी भारत के सर्वोच्च सत्ताधरी बन गए। इस प्रकार कुरुओं के अधीन सरस्वती तथा गंगा घाटी के चारों ओर का विस्तृत भू–भाग, जो एक प्रकार से विशाल हरियाणा ही है, .षि, उद्योग, ग्रामीण विकास तथा राजनीतिक सत्ता का केंद्र बन गया।

साभार–बुद्ध प्रकाश, हरियाणा का इतिहास, हरियाणा साहित्य अकादमी पंचकूला, पृ. 1

मेवाती शायर सादल्ला, जिसने मेवाती बोली में लोक महाभारत रचा

–जीवन सिंह

आपको यह जानकर खुशी होगी कि जिस नूह में पिछले दिनों सांप्रदायिक दंगे कराये गये उसी इलाके में नूह के नजदीक आकेड़ा गांव में अठारहवीं सदी में दो बड़े शायर पैदा हुए,एक का नाम है सादल्ला तो दूसरे का नाम है नबी खां।इन दोनों ने महाभारत की कथाएं अपने पूर्वज मीरासियों से सुन सुन कर पूरे मेवाती परिवेश, लहजे और चरित्रों के अपूर्व संयोजन के साथ लोकगाथा काव्य लिखा .– नाम दिया पंडून कौ कड़ा अर्थात पांडवों की कथा। इसमें पंडून की जन्म पतरी, भींव कौ कड़ा और अरजन कौ कड़ा,सादल्ला ने रचे,जो अधूरी कथा रह गयी, उसकी पूर्ति नबी खां ने बबराबाण कौ कड़ा यानी वभ्रुवाहन की कथा रचकर की।इसके बारे में सादल्ला ने कहा .–

सत्तरह सौ सत्तानवे बरस गया हैं बीत।
जानै पंडू अब हुया,याकी कौन करै परतीत।

इसे मीरासियों ने मेवों और मेवात में बसे हिंदुओं के पर्वों, उत्सवों और समारोहों में गा गाकर अमर कर दिया। पहले के शादी विवाहों में बारात तीन दिन रुका करती थी। ऐसा हिंदुओं के यहां ही नहीं, मेवों के यहां भी हुआ करता था। बचपन में मैंने अपने घर में एक रथ देखा है जिसके लिए अलग से ऐसे बैल रखे जाते थे जिनसे रथ में दौड़ने के अलावा कोई अन्य काम नहीं लिया जाता था।हमारा रथ हिंदुओं और मेवों दोनों की बारातों में जाता था,तब रात्रि में मीरासियों का लोक गायन होता था जिसमें वे पंडून के कड़े भी गाकर सुनाते और उसके बदले में इनाम–इकराम पाया करते थे। इनमें से ही ऐसे मीरासी भी निकल आते थे जो स्वयं शायरी करने लगते थे।ये मीरासी चूंकि मेवात के हिंदुओं को भी अपना यजमान मानते थे इसलिए इनके पास सभी तरह की चीजें हुआ करती थी। दोनों समुदायों के हृदयों को लंबे समय तक जोड़कर रखने में इन मीरासियों की बहुत बड़ी भूमिका होती थी।सच तो यह है कि इसी मीरासी समुदाय ने मेवाती लोक सं.ति को खुद भूखा रहकर रचा है। इनके पास हारमोनियम होते थे जिनसे गा गाकर ये भादों के महीने में हर घर से अनाज मांगकर अपनी आजीविका चलाते थे। चौधरियों, नंबरदारों, जागीरदारों का संरक्षण भी इनको मिला हुआ होता था। किंतु धीरे धीरे यह सब कुछ बंद हो गया इससे हिंदुओं और मेवों की नयी पीढ़ियों का अपने लोकसाहित्य से रिश्ता विच्छेद होता गया।आज दोनों समुदायों की जो नयी पीढ़ियां है उनका स्मृति लोप हो चुका है। इसके विपरीत दोनों ही समुदायों का तेजी से सं.तीकरण हो रहा है। हिंदू पहले से ज्यादा हिंदू हो रहा है इसी तरह मेव समुदाय भी पहले से ज्यादा मुसलमान बन रहा है। पूंजीवादी व्यवस्था में जो अलगाव और अजनबीपन होता है वह भी तेजी से बढ़ रहा है। तीसरे लोकतंत्र में ध्रुवीकरण का ऐसा खतरा पैदा कर दिया गया है जिससे धर्म संप्रदायों का ही नहीं, जातियों का ध्रुवीकरण करने की प्रक्रिया बहुत तेजी से बढ़ी है। महंगाई, भ्रष्टाचार और बेरोजगारी की मार ऊपर से निम्न और निम्न मध्यवर्ग पर पड़ ही रही है।ये ऐसे कारक हैं जो समाज में फूटपरस्ती को बढ़ाने का काम करते हैं। बहरहाल, सादल्ला जैसे शायरों का जमाना आज जैसी संस्कृतिहीनता का जमाना नहीं था।तभी तो उनकी प्रशंसा करते हुए किसी मीरासी शायर ने कहा था– कुछ लोग यह भी मानते हैं कि यह अपने बारे में सादल्ला का ही कथन हैः–

जंह तक बेद कुरान हैं, हूं तक सादल्ला।
आगे अगम अथाह है, मेरो जानै है अल्लाह।

Remembering the Great Sardar

- R.N.Malik

The 123rd Birth Anniversary of Sardar Patel, the Iron Man of India falls on 31st October. Na-turally, this day reminds one to revisit the life and deeds of this great leader whom India owes so much. Persons like the great Sardar are born once in centuries. After his death in Decem-ber 1950, the country has not seen a man like

him so far over a long span of 73 years. Great-ness of Sardar Patel is immeasurable right from the start of his political career in 1917. He passed his Bar Examination in England in 1912 by standing first and became the Barrister. He returned to India very soon and restarted his practice at Ahmedabad. He had already made his name as a competent criminal lawyer as he could entangle the shrewdest witness to bring out the truth. He adopted western mannerism, always wearing suit, necktie and hat. His legal practice picked up very soon and he was counted among the top lawyers of Ahme-dabad. He used to laugh whenever his his colleagues talked of Gandhi Ji becoming a rising star to lead the nation to achieve Swaraj.. But success of Champaran Satyagraha underta-ken by Gandhi Ji in 1917 transformed his life overnight. He attended the meeting of Gujrat Sabha chaired by Gandhi Ji in November 1917 and offered his full time service for his cause. Consequently, hel eft his roaring practice and started wearing Khadi dress since then made of yarn spun by his daughter.

He was younger to Gandhi Ji by six years but maintained Guru-Shishya relationship till end. He swallowed his pride when Gandhi Ji made Jawaharlal as the next Congress President in 1946 and accepted his decision without demure for the sake of unity in the party and service to the nation. He was senior to Jawaharlal by 14 years and he had no regret whatsoever to serve his deputy because he felt that he was serving his nation and pedestal of service did not matter.

Sardar Patel remained the backbone of all the Freedom Movements led by Gandhi Ji. He prepared the total ground work for the success of Hartal on 6th April 1920. He was not ar-rested during the Non-cooperation movement of 1920 as Government feared that his arrest would bring an avalanche in Gujrat. Again Sardar Patel provided the required momentum to the Salt Satyagraha (Dandi March) in March 1930 by addressing people in large number of villages. Again on gathering an audience of 50000 people at Bombay on 8th August 1942 at the time of launching Quit India Movemet was entirely due to the efforts of Sardar Patel. Both Jawaharlal Nehru and Maulana Azad were hesitant to support the move but they fell in line once Gandhi Ji asked them to leave the party if they had doubts. A glimps of his galvanising speech on 26th July, 1942 at Ahmedabad is worth mentioning. He thundered," if all the lead-ers are arrested tomorrow, be prepared to die but do not fall back. This time, if a railway line is removed or an English man is murdered, the struggle will not be stopped......."

Sardar Patel was the only leader who led four individual nonviolent movements to resounding success. These were; Movement in Kheda district of Gujrat in January1918, Nagpur Movement in March 1923, Borsad Movement in September 1923 and finally Bardoli Movement in March 1928. People were able to bear the atrocities of the government during these four movements simply because Sardar Patel was leading them. Bardoli Satyagraha continued for six months.and farmers had started addressing Vallabbhsi Patel as Sardar. Thereafter, Vallabhbhai Patel became Sardar Patel and continues to be addressed as such till now.

The most defining moment for the great Sardar came in June 1947. Indian Independence Act had been granted the Royal approval on 18th June 1947 but the policy towards deciding the administrative set up of princely States vis-a-vis two Dominion was left unclear. Lord Mountbatten, the Governor-General, was very keen to annex all the 555 States(10 were in Pakistan) with Indian Union for three reasons. Firstly, he did not want to leave behind India in a mesh and be judged inappropriately by the history. Secondly, he was appalled by the way princes were wasting state resources in profligate manners when the people were facing grinding poverty for centuries under their rule.He realised that merging of States with democratic India would bring democratic and economic freedom to one third population of India. For example, the Nawab of Junagarh was keeping 300 dogs and monthly expenditure of each dog was Rs.16000. Thirdly, he told Attlee that a strong and unified India would have durable friendly relations with Britain. Sardar Patel had very wisely prevailed upon Nehru and Gandhi Ji to let Mountbatten to continue as Governor-General after 15th August till the issue of annexation of States was or or less complete. Mountbatten felt gratified at this gesture of Sardar Patel. In turn, Mountbatten, promised Sardar Patel to offer him a Basket of Apples (princely States) before he demitted the office and left for England. So, he created the State Department in July to deal with the issue of annexation of States and brought this department under the wings of Home Ministry headed by Sardar Patel. He knew that only Sardar Patel would be able to deal with this nerve wrecking issue effectively.and silence all kinds of princes. He deputed his Reform Commissioner V.P. Menon as the Secretary of the State Department. V.P. Menon who started his career as a clerk, had risen to this high pedestal by dint of his hard work and pragmatic intelligence.

The die for annexation was cast in the first week of July, 1947. V.P. Menon had drafted the document for annexation of States into India. It was called the Instrument of Accession. Jinn-ha had declared that he wanted to creat boils in the body politics of India and consequently was busy in cajoling some of the princes to declare independence by assuring international recognitio. Legally they could do so. But Sardar Patel foild his ignoble designs by taking premptive advance measures.

The Instrument of Accession assured the princes that Government would have controll over States only in three subjects I.e External Affair, Defence and Communications and they would enjoy full internal autonomy in running their States. Knowing that many princes would not like to forsake their royal status, Sardar Patel and Mountbatten adopted a carrot and dagger strategy to deal with them; carrots (Privy purses, honorifics, Ambassadorships) for those who agree for annexation noiselessly and dagger for the recalcitrants. The com-mon threat issued was that their subjects were fed up with their hedonistic lifestyles and have developed a great urge for democratic set up and could revolt against them any time and put their safety and future in jeopardy and Indian government would not come to their rescue in that situation. Most unwilling understood the hidden meaning of this threat and agreed to join the Indian Union. Maharaja of Patiala Bhalindra Singh (father of Captain Amrinder Singh) was the first Prince to sign the Instrument of Accession. Later, he was posted as India's Ambassador in Holland.

Mountbatten called and chaired the Conference of Chamber of Princes on 25th July.1947. Beside him strode the senatorium figure of Sardar Patel. Then, Mountbatten delivered a his-torical speech that bordered on a brazen threat to the princes. He told them that British su-zernity would be over after 15th August and thereafter they would have to negotiate with (pointing his finger towards the great Sardar) this man. The document of annexation prepared by Menon would not be repeated. Then he added a detached observation that any armaments they might think of stockpile would soon be obsolete. The princes were stunned at this speech and most of them realised that their was no better alternative than to join the. Indian Union. To accelerate his efforts further, Mountbatten held a reception dinner for the princes on 28th July at which he, Sardar Patel and V.P. Menon joined hands to bully the unwilling and recalcitrant princes. Mountbatten called the unwilling princes one by one and directed them to see V.P. Meenon who in turn directed them to see Sardar Patel where they submitted meekly. Thus, Maharajas stood around nervously to watch this daunting triumvirate work on each of their fellows in turn. This way, all the recalcitrant princes had been brought into submission except that of Hyderabad and Kashmir when Mountbatten left India on 21st June 1948. Maharaja Hari Singh of Kashmir signed the Instrument of Accession on 26th October 1947 while Hydrabad was annexed on 21st September 1948 after resorting to the military operation.led by Major General J.N.Chaudhari who became C-in-C in 1962.

65 percent States were having a geographical area less than 20 Sq. miles each. V.P. Menon decided to amalgamat these geographically contigous tiny States into a Union and get the signatures on the dotted lines of the Instrument of Accession

This way, Annexation of rest of the States were singularly managed by intrepid V.P. Menon. He did not bother ailing Sardar Patel too much and sought his help where it was needed most. Gujrat had 200 tiny States. He amalgamated these states into Kathiawad Union on 16th February 1948. Likewise and finally, small States of Rajputana were unified into Rajsathan Union and this unification was inaugurated by Sardar Patel on 30th March 1949 at Jaipur. This is how all the 555 States were annexed and India became Akhand Bharat for the first time in the history. The dream of Sardar Patel and V.P. Menon was finally fulfilled on this auspicious day and the two stalwarts had a sound sleep for the first time on that day.

The government of India did not reward V.P. Menon for his stupendous work continously done for 21 months. He cajoled, coaxed and threatened the rulers into joining into newborn Indian Union. C. C. Desai, ICS paid the most appropriate tribute to V.P. Menon when he said," V.P.Menon knew how to keep rulers happy even while their death warrants were being prepared." Government of India forgot completely the contribution made by V.P.Menon in making India as Akhand Bharat on 30th March 1949. No civilian award was bestowed upon him though he richly deserved Bharat Ratna. He was given the charge of Governor of Orrisa for two months and then made the member of the first Finance Commussion. That is all. His biographer and great grand daughter Narayani Basu is justified to call him The Unsung Architect of Modern India.

Sardar Patel could not lead a happy and contented life even after August 1947. Factors were monumental problems of rehabilitation of refugees, maintaining communal harmony, attend-ing large number of meetings, attending Constituent Assembly sessions, jittery behaviour of Jawaharlal Nehru and martyrdom of Gandhi Ji. Process of unification of States did not give him much trouble as bulk of work was handled by V.P.Menon. He had his first massive heart attack on 5th March 1948 and the great Sardar told that heavy work and grief of Bapu's death bottled up his heart. Annexation of Tibet by China and Nehru not doing anything further filled his heart with grief. Nehru was feeling jittery and uncomfortable with Satdar mainly because entire Congress party was with the great Sardar even though Nehru was the Prime Minister. Leaders of that time had not developed the habit of worshipping the rising sun. Consequently, Nehru could not have his way in getting Raja Ji as the first President of Sovereign India in January 1950 and then have Achsrya Kriplani as the Congress President pitted against P.D.Tandon put by Sardar Patel. Sardar's condition deteriorated in December 1950 due to weakening of his ailing heart. He was shifted to Birla House in the warmer climate of Bombay onn the advice of his doctors on 12th December. But this change brought no relief and the end came on 15th December in the morning. He was cremated at Sonepur cremation ground where his wife and elder brother Vithalbhai had been cremated . There was a sea of mourners. Nehru, Azad and Dr. Rajendra Prassad were also present at the funeral. Dr. Rajendra Prassad wept inconsolably. As a parting tribute to his friend, philosopher and guide, he said," Sardar's body is being consumed by fire. But no fire can consume his fame." Sardar left behind nothing except his pairs of Khadi clothes and legacy. The statement of Nehru at the time of Martyrdom of Gandhi Ji,"Light is out of our lives." was applicable at yhis moment also.

My heart fills with sadness when I see the building of Sardar Patel Samarak Bhawan at 7 Jantar Mantar Delhi in poor condition and becoming the office of JDU party of Nitish Kumar and name of Sardar Patel stadium being renamed as Narendra Modi stadium.

वैवाहिक विज्ञापन

- SM4 Jat Girl (DOB 11.07. 97) 26/5'5" B.Sc. Non-Medical from Kurukshetra University, M.Sc. Non-Medical from P. U. Chandigarh. Father Headmaster in Haryana Govt. Mother JBT teacher in Haryana Govt. Family settled at Panipat. Avoid Gotras: Deswal, Dahiya, Malik. Cont.: 7988993289, 9416173036
- SM4 Jat Girl (DOB 08.08.97) 26/5'1" B. Tech from PEC Chandigarh. Employed in Exxon Mobile Banglore with Rs. 15-20 lakh package PA. Father retired Class-1 officer from Haryana Government. Mother teacher in Haryana government. Avoid Gotras: Malik, Phaugat, Dhankhar. Cont.: 9463962490
- SM4 Jat Girl (DOB 31.01.95) 28/5'1" B.Sc., M.Sc. (Botany). UGC, NET qualified. Ph.D in Botany from P. U. Chandigarh. Employed as Assistant Professor in College at Karnal on contract basis. Father retired from Defence. Mother housewife. Family settled at Ambala Cantt (Haryana). Avoid Gotras: Rathi, Kharb, Rana. Cont.: 9812238950
- SM4 Jat Girl (DOB 16.06.95) 28/5'2" Bachelor in Computer Science Engineering. Experience: 6 month internship in Yatra Pvt. Ltd. on line, 2 year as Software Engineer in Yatra Pvt. Ltd., on line. Earnings 11 lac P.A. Avoid Gotras: Kundu. Cont.: 9417869505.
- SM4 Jat Girl (DOB 10.02.96) 27/5'8" B.A., M.A. Economics. Self Employment (Home Tution). Father Superintendent in Forest Department Haryana. Mother housewife. Avoid Gotras: Kundu, Pahal, Lather. Cont.: 9463226838, 8837546452
- SM4 Jat Girl (DOB 18.11.98) 24/5'4" B.Com., C.A. Package 24 lakh Annual. Father retired Superintendent. Mother housewife. Own house in tricity. Avoid Gotras: Kadyan, Falswal, Dahiya. Cont.: 9888955626
- SM4 Jat Girl (DOB 10.07. 2000) 23/5'4" BAMS, Doing Internship BAMS. Father Sub-Inspector CRPF. Mother ANM. Avoid Gotras: Nehra, Gadhwal, Michuh. Cont.: 9015124456
- SM4 Jat Girl (DOB 04.02.98) 25/5'4" B. Com. from M.D.U. M.Com. from C.B.L.U. University. NET cleared. Father Head constable. Mother Housewife. Avoid Gotras: Nehra, Gadhwal, Michuh. Cont.: 9413431141
- SM4 Jat Girl (DOB 17. 02.92) 31/5'3" M.A. Economics. B.Ed. Working as teacher in private school. Avoid Gotras: Nain, Sangwan, Dhaliwal, Panghal. Cont.: 8699726944, 7837908258
- SM4 Jat Girl (DOB 17.09.94) 29/5'3" M.B.A. (Post Graduate 2018), B.Com. (Graduation 2016) from IFCA Business School Punjab University. PGPM, P.G.

(Certificate Programme in Managing Brand & Marketing Communication). Working as Consultant in Deloitte Office of India Gurugram. Package Rs. 11.8 lakh PA. Father ETO in Haryana Government. Mother housewife. Preference match working in private Sector. Avoid Gotras: Kodan, Nandal, Hooda (Kharb). Cont.: 9468274677

- SM4 Jat Girl (DOB 19.11.91) 31/5'3" B.Tech (ECE), PG Diploma in Housing Finance. Working as Assistant in Central Government PSU LIC on regular basis near Chandigarh. Salary Rs. 7 lakh PA. Father retired Senior Bank Manager. Preference city based educated family residing in Chandigarh, Panchkula, Zirakpur or Hisar. . Avoid Gotras: Thaken, Sindhu, Mahala, Sheoran. Cont.: 8557033198
- SM4 Jat Girl (DOB Nov 94) 28/5'2" NET in Commerce, B.Ed., HTET, PGT Commerce, Pursuing PhD. From M.D. U. Worker as Guest Faculty at CDLU Sirsa. Presently working at M.K.J.K. College Rohtak. Father in Haryana government. Mother housewife. Avoid Gotras: Gill, Goyat, Ahlawat. Cont.: 9416193949, 9992221480
- SM4 Jat Boy (DOB 28.04.96) 27/184 CM. Captain in Army. Posted at Pune. Father in transport business. Mother housewife. Family settled at Zirakpur. Avoid Gotras: Dhull, Sheoran, Nehra. Cont.: 9878705529
- SM4 Jat Boy (DOB 25.01.97) 26/5'11" B. Tech. in Computer Science. Working as Lead Software Engineer in Statrys Ltd. at Bangkok, Thailand with Rs. 31 lakh package PA. Family settled at Pinjore. Avoid Gotras: Thenwa. Cont.: 8558024346
- SM4 Jat Boy (DOB 10.12.93) 29/ B. Tech. Employed in PGIMER Chandigarh in Fire & Security Department. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Sangwan, Jakhar, Sheoran. Cont.: 8901138020, 8882830601
- SM4 divorced Jat Boy (DOB 14.03.95) 28/5'10" M. A. English. Employed in Municipal Corporation Chandigarh as clerk on contract basis. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Sangwan, Jakhar, Pachahar. Cont.: 9463961502
- SM4 Jat Boy (DOB 12.07.96) 27/5'8" B. A., pursuing M.A. Employed as Stenographer (Govt. job) in Education Department. Avoid Gotras: Narwal, Kundu, Mann. Cont.: 9417869505, 9315428491
- SM4 Jat Boy (DOB 26.05.98) 25/5'8" MBBS. Working as J.R. in Safdar Jung Hospital Delhi. Father Sub-Inspector CRPF. Mother ANM. Avoid Gotras: Nehra, Gadhwal, Michuh. Cont.: 9015124456
- SM4 Jat Boy (DOB 20. 10. 92) 30/5'5" Graduate. Doing private job. Father retired from Government job. Mother in private job. Family settled at Chandigarh. Avoid Gotras: Lamba, Nandal, Ghalyan. Cont.: 7696771747
- SM4 Jat Boy (DOB 17.10. 89) 33/ 6 feet B.Tech (CSE). Employed as Inspector, GST & Central Excise Department in Ministry of Finance, Government of India at Surat (Gujrat). Girls height minimum 5'6" and between 25 to 27 years. Area of preference Panchkula, Chandigarh, Yamuna Nagar, Kurukshetra, Karnal, Hisar. Father retired Superintendent. Mother housewife. Avoid Gotras: Malik, Jattan, Punia. Cont.: 9996858234
- SM4 Jat Boy 27/6'1" MBA, Marketing & Finance. Working as Assistant Manager in HDFC Bank Chandigarh. Father in government job at Chandigarh. Mother housewife. Avoid Gotras: Saroha, Malik, Sehrawat. Cont.: 9463384601
- SM4 Jat Boy (DOB 25.04.93) 30/6'1" B.Tech Mechanical. Working as Assistant Manager (Marketing) in Jai Parvati Forge Ltd. Company. Income Rs. 6 lakh P.A. Agriculture land 4 ½ acres. Own house at Zirakpur (Punjab). Avoid Gotras: Nehra, Kadyan, Dhull. Cont.: 9877996707
- SM4 Jat Boy (DOB 06.04.91) 32/5'11" B.Tech. from PEC Chandigarh. IIT-JEE (Advanced). Working as Math Faculty at Allen Career Institute Chandigarh. Salary Rs. One lakh per month. Avoid Gotras: Malik, Ahlawat. Cont.: 9416293888
- SM4 divorced (without issue) Jat Boy 45/6'3" Lieutenant Colonel in Indian Army. Mother Doctor Ayurvedic Own Clinic. Family settled at Nayagaon (Punjab). Avoid Gotras: Tomar, Malik. Cont.: 8847034750.
- SM4 Jat Boy 32/5'8" HCS, Employed as A class Tehsildar at Narnounl (Haryana). Father retired Government employee. Mother housewife. Family settled at DLF Panchkula. Avoid Gotras: Malik, Narwal, Rathi. Cont.: 9812208238
- SM4 Jat Boy (DOB 11.03.92) 31/6'4" B. Tech in Textile. Working in mil of textile as Technical Officer at Surat. Father retired JCO. Mother housewife. Preferred girl in Centre Government job of at least 5'4" height between 25-30 years' age. Avoid Gotras: Tomar, Kadian, Phogat. Cont.: 9416520843
- SM4 Jat Boy (DOB 26.05.94) 29/6'3" B. Tech. (Mechanical). Lives in Canada. Father in Government job. Mother Government teacher. Younger brother in Canada. Avoid Gotras: Shyan, Punia. Cont.: 9416877531, 9417303470

चौधरी भरतसिंह मेमोरियल डिफेन्स एकेडमी ने मात्र 6 महीने में रचा इतिहास

खेलों के साथ शिक्षा स्तर पर बच्चों का बेस किया जाता है तैयारः कृष्णा मलिक

चौधरी भरतसिंह मेमोरियल खेल स्कुल निडानी के खिलाडी लगातार अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा रहे है इसके साथ साथ संस्था में पिछले 6 महीनों से चल रही चौधरी भरत सिंह डिफेन्स एकेडमी मैं प्रेक्टिस करने वाले कुल 38 बच्चों में से विभिन्न पदों पर 8 बच्चों का चयन हो गया है मात्र 6महीनों के अपने कार्यकाल में 8 बच्चों का चयन होने से संस्था ने नया कीर्तिमान स्थापित्त किया हैं यह बात संस्था की चेयरपर्सन कृष्णा मलिक ने बताते हुए कहा 8 बच्चों में पवन मोर नर्सिंग सहायक, अमन और राहुल क्लर्क, खुशबु व मोसम ए बी पी एम डाकघर के ईलावा 3 बच्चों का सेना में जरनल ड्यूटी के लिए चयन हुआ है जो काबिले तारीफ है। मेजर जरनल जोगेंद्र सिंह एकेडमी के स्थाई सलाहकार हैं जों समय समय पर अभ्यास करने वाले बच्चों और प्रशिक्षकों को अपने अनुभव साँझा करते रहते है। कृष्णा मलिक ने सभी चयनित बच्चों को बधाई देकर उनके उज्चल भविष्य की कामना करते हुए कहा की संस्था खिलाडी और स्कूल छोड़ चुके बच्चे जो सरकारी सेवाओं में अपनी भूमिका निभा रहे है वह सदैव अपनी निष्ठा का अनुशासन से निर्वहन कर रहे है। कृष्णा मलिक ने कहा की हाल ही में चल रहे एशियन गेम्स में भी संस्था के खिलाड़ी अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा रहें हैं और देश की झोली में मैडल डाल रहे है जिसमें कबड़ी खिलाडी साक्षी पुनियाँ, तथा मलिक ने अपनी महेनत से मैडल देश की झोली में डालने का काम किया है। यह भी संस्था के लिए एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। कृष्णा मलिक ने कहा की चौधरी भरतसिंह मेमोरियल में चल रही डिफेन्स एकेडमी के डायरेक्टर ओम दत्त शर्मा, प्रशिक्षक कुलदीप मलिक, कोच बजरंग लाठर द्वारा बच्चों से कड़ी महेनत करवाई जाती है जिसका परिणाम मात्र 6 महीने में ही दिखने लगा है। संस्था के संरक्षक जाट सभा चंडीगढ़ के अध्यक्ष व पूर्व डीजीपी डॉ. महेन्द्र सिंह मलिक ने सभी चयनित बच्चों मैडल जितने वाली महिला खिलाडियों को बधाई देते हुए कहा की जाट सभा चंडीगढ़ हमेशा खिलाडियों और सेनिकों का हौसला बढ़ाती रही है और भविष्य में भी प्रतिभावान बच्चों को सम्मानित करते रहेंगे। डॉ. मलिक नें कहा की हरियाणा प्रदेश में बेरोजगारी 37.4 प्रतिशत है जिसको खेलों और शिक्षा के माध्यम से कम किया जा सकता है। हमारे जीवन में शिक्षा सबसे अनमोल धन है ओर इसे कोई भी छीन नहीं सकता।

जाटों का खेलो में प्रदर्शन

JATS have won a total of 50 medals out of the total 107 medals won by India. i.e. about 47%

LONG LIVE JATS UNITY

17 Gold JATS won and India's total 28. i.e. about 60 % 10 Silver JATS won and India's total 38. i.e. about 26 % 23 Bronze JATS won and India's total 41. i.e. about 56 %

आर्थिक अनुदान की अपील

प्रिय साथियों, भाई–बहनों एवं बुजुर्गों,

आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि गांव नोमैई, ग्राम पंचायत कोटली बाजालान कटरा–जम्मु में जी.टी. रोड़ 10 पर चौ० छोटूराम यात्री निवास कटरा के लिये प्रस्तावित 10 कनाल भूस्थल पर चार दिवारी का निर्माण शुरू हो चुका है जिस पर अभी तक 18 लाख रुपये खर्च हो चुका है और इस पर लगभग 40 लाख रुपये खर्च होगा। यात्री निवास स्थल पर विकास एवं पंचायत विभाग कटरा द्वारा सरकारी खर्च से दो महिला व पुरूष शौचालय एवं स्नानघर का निर्माण पहले से किया जा चुका है और यात्री स्थल की लिंक रोड़ पर छोटी पुलिया के निर्माण हेतु पी०डब्ल्यू०डी० (बी एण्ड आर) विभाग कटरा द्वारा 29 लाख की ग्रांट स्वीकृत हो चुकी है और इस वर्ष ग्रांट राशि जारी होते ही पुलिया का निर्माण हो जायेगा।

यात्री निवास भवन का शिलान्यास व दीन बंधु चौधरी छोटू राम को विशालकाय प्रतिमा का अनावरण 10 फरवरी 2019 को बसंत पंचमी उत्सव एवं दीनबंधु चौधरी छोटूराम की 136वीं जयंती समारोह के दौरान महामहिम राजपाल, जम्मु काश्मीर माननीय श्री सत्यपाल मलिक द्वारा तीन केंद्रीय मंत्री चौधरी सिंह केंद्रीय राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) पीएमओ डा जितेंद्र सिंह व जाट सभा के अध्यक्ष एवं हरियाणा के पूर्व पुलिस महानिदेशक डा एम एस मलिक, भा०पु०से० (सेवानिवृत) की उपस्थिति में संपन्न किया गया।

यात्री भवन में फैमिली सुईट सहित 300 कमरे होगें। जिसमें मल्टीपर्पज हाल, कांफ्रेंस हाल, डिस्पेंसरी, मैडीकल स्टोर, लाइब्रेरी, बच्चों की प्रतिभा विकास एवं विभिन्न व्यवसायिक व सुरक्षा संबंधी सेवाओं में प्रवेश के लिए कोचिंग की विशेष सुविधाएं उपलब्ध होगी। सुरक्षा सैनिकों, शहीद परिवारों व उनके आश्रितों के लिए मुफ्त ठहरने तथा माता वैष्णों देवी के बदलुओं के लिए विशेष सुविधाएं प्रदान की जाएगी। यात्री निवास के निर्माण के लिये श्री राम कंवर साहु सुपुत्र श्री पूर्ण सिंह, गांव बीबीपुर जिला दान निवासी मकान नं0 110 सुभाष नगर, रोहतक द्वारा 5,11,111 रुपये तथा श्री सुखबीर सिंह नांदल, निवासी मकान नं. 426–427, नेमी सागर कालोनी, वैशाली नगर, जयपुर द्वारा 5,01,000 रुपये तथा श्री देशपाल सिंह निवासी मकान न0 990, सैक्टर–3, कुरुक्षेत्र (हरियाणा) द्वारा 5,00,000 रुपये की राशि जाट सभा को दान स्वरूप प्रदान की गई है।

अतः आप सभी से नम्र निवेदन है कि इस कल्याणकारी व पुनित सामाजिक कार्य के लिए स्वेच्छा अनुसार शीघ्र अनुदान देने की कृपा करें ताकि चार दिवारी पूरी होने के बाद निर्माण कार्य शुरू किया जा सके जोकि आज सभी के सहयोग से ही सम्भव हो सकेगा। यदि कोई दानी सज्जन यात्री निवास में कमरे के निर्माण हेतु 5 लाख रूपये या इससे अधिक की राशि दान देता है तो उसका नाम भवन परिसर में उचित स्थान पर अंकित किया जाएगा। यात्री निवास भवन के लिए अनुदान देने वाले सज्जनों का उचित विवरण रखा जाएगा और उनका नाम सभा द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका 'जाट लहर' में भी प्रकाशित किया जाएगा। भवन निर्माण की अनुदान राशि चैक, डिमांड ड्राफ्ट द्वारा 'जाट सभा चंडीगढ़' के पक्ष में जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, मध्य मार्ग, चंडीगढ़ में भेजी जा सकती है अथवा आर.टी.जी.एस की मार्फत सीधे जाट सभा के बचत खाता नंबर 50100023714552, आईएफएससी कोड– एचडीएफसी 0001324 में ट्रांसफर की जा सकती है। अनुदान की राशि आयकर अधिनियम की धारा 80–जी के तहत आयकर से मुक्त है।

निवेदक : कार्यकारिणी जाट सभा चंडीगढ़/पंचकुला,
चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

सम्पादक मंडल

सरंक्षक एवं सम्पादक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)

सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान

साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक

प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो० : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो० : 9416282798

वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़

फोन : **0172-5086180, M-9877149580**

Email: jat_sabha@yahoo.com; Website: www.jatsabha.org

सर छोटूराम जाट भवन, सैक्टर–6, पंचकूला

फोन : 0172–2590870, M-9467763337

Email: jatbhawan6pkl@gmail.com

चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

Postal Registration No. CHD/0107/2021-2023

RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सरंक्षक सम्पादक डा. एम. एस. मलिक ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियेटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2–बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27–ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।